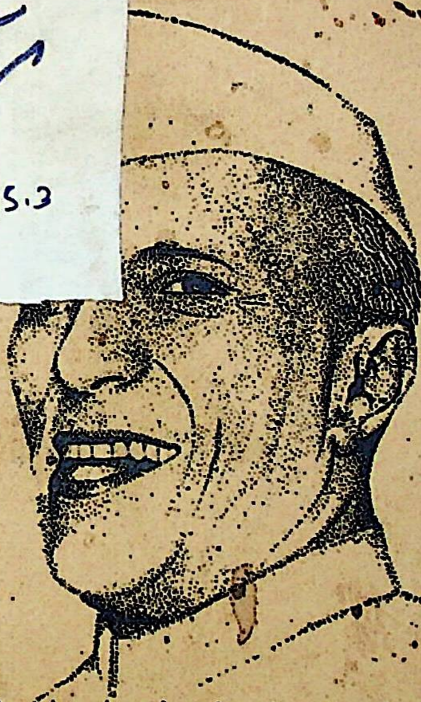


जनता के जवाहर

बाबूराव जोशी

हिन्दी प्रकाशन

कुमारी दीपा
प्रथम पुरस्कार
कक्षा - ४

जनता के जवाहर

❀

श्री बाबूराव जोशी

❀

१९५१

हिन्दी प्रकाशन मन्दिर

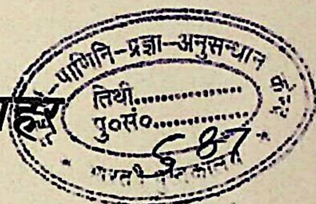
इलाहाबाद

हिन्दी प्रकाशन मन्दिर
इलाहाबाद, के लिए
सस्ता साहित्य मण्डल द्वारा प्रकाशित

पहली बार : १९५१
मूल्य
बारह आना

मुद्रक :
श्यामकुमार गर्ग,
हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस,
क्वीन्स रोड, दिल्ली।

विषय-सूची



जनता के जवाहर

: १ :

बापू के उत्तराधिकारी

क्या आपने अपने प्रधान मन्त्री को देखा है ? वे दुबले-पतले हैं; लेकिन स्वस्थ हैं। वे बहुत कम बीमार होते हैं। वे कश्मीरी हैं; लेकिन सारे भारत को प्यार करते हैं। सारा भारत उनको प्यार करता है। वे गोरे हैं; लेकिन काले आदमियों से जरा भी नफ़रत नहीं करते। वे काले आदमियों के सिरताज हैं। वे कोमल दिखाई देते हैं लेकिन बड़े वीर हैं। बड़ी-से-बड़ी मुसीबत को भी सह लेते हैं। वे किसी से डरते नहीं हैं।

उनका चेहरा बड़ा सुन्दर है। उनके चेहरे पर बड़ा तेज है। उनके ओंठ पतले और बन्द हैं। नाक ऊंची है। आंखें चमकदार हैं। उनकी नज़र पैनी है। उनका ललाट चौड़ा है। सिर के बाल सफेद हैं। उनके सिर के बीचों-बीच बाल नहीं हैं। उनके हाथ लम्बे हैं। बहुत बड़े आदमियों के चेहरे पर ही तेज होता है। जो अपनी

बात का पक्का रहता है उसी के ओठ पतले रहते हैं। जो बहुत बुद्धिमान होता है उसी की नजर पैनी रहती है। जो बहुत धनी होता है उसी के सिर के बीचों-बीच बाल नहीं होते हैं। जो बड़ा वीर होता है। उसी के हाथ लम्बे होते हैं। हमारे प्रधान मन्त्री तेजस्वी हैं। वे बुद्धिमान हैं। अपनी बात के पक्के हैं। शान के धनी हैं। वे वीर हैं।

वे खादी की सफेद टोपी पहनते हैं। वे खादी का सफेद कुर्ता पहनते हैं। वे खादी की सफेद धोती पहनते हैं। वे खादी की जाकेट पहनते हैं। वे कभी-कभी शेर-वानी भी पहनते हैं। वे कभी-कभी चूड़ीदार पायजामा भी पहनते हैं। वे कभी-कभी टोप भी पहनते हैं। वे कभी-कभी सूट भी पहनते हैं। लेकिन उनको धोती, कुर्ता और टोपी बहुत अच्छे लगते हैं। उनको खादी बहुत अच्छी लगती है। इसलिए वे चर्खा चलाते हैं। वे सूत कातते हैं।

आप समझ गये होंगे कि उनका नाम क्या है? उनका नाम है पंडित जवाहरलाल नेहरू। धनवान उनको पंडितजी कहते हैं। गरीब उनको पंडितजी कहते हैं। किसान उनको पंडितजी कहते हैं। मजदूर उनको पंडितजी हतेक हैं। राजा उनको पंडितजी कहते हैं, भिखारी उनको पंडितजी कहते हैं। सब उनकी बात

मानते हैं। सब उनका आदर करते हैं। सब उनको प्यार करते हैं।

पुराने भारत मन्त्री लार्ड पेथिक लारेन्स कहते हैं—जवाहरलाल सबकी आजादी चाहते हैं। जवाहरलाल सबकी बराबरी चाहते हैं। जवाहरलाल सबकी उन्नति चाहते हैं। वे काले-गोरे का भेद मिटाना चाहते हैं। वे धनवान-गरीब का भेद मिटाना चाहते हैं। वे ऊंच-नीच का भेद मिटाना चाहते हैं। वे अपनों के साथ पक्षपात नहीं करते। वें दूसरों के साथ कड़ाई नहीं करते। वे हार से परेशान नहीं होते। वे जीत से फूल नहीं उठते। वे भारत को अच्छा रास्ता दिखा रहे हैं। वे दुनिया को अच्छा रास्ता दिखा रहे हैं।

भारत-मन्त्री की बात सच है। पंडितजी भारत को अच्छा रास्ता दिखा रहे हैं। पंडितजी दुनिया को अच्छा रास्ता दिखा रहे हैं।

पुराने वाइसराय लार्ड माउन्टबेटन कहते हैं—जवाहरलाल के सामने बड़ी-बड़ी कठिनाइयां है। जवाहरलाल के सामने बड़े-बड़े सवाल हैं। जवाहरलाल के सामने बड़े-बड़े काम हैं। जब इतिहास लिखा जायगा तब मालूम होगा कि जवाहरलाल ने कितनी कठिनाइयां पार कीं! तब मालूम होगा कि जवाहरलाल ने कितने सवाल हल

किये। तब मालूम होगा जवाहरलाल ने कितने बड़े-बड़े काम किये। वे महान् में भी महान् हैं।

वाइसराय की बात सच है। पंडितजी ने देश की बड़ी-बड़ी कठिनाइयां दूर की हैं। पंडितजी ने देश के बड़े-बड़े सवाल हल किये हैं। पंडितजी ने बड़े-बड़े काम किये हैं। सचमुच वे महान् हैं। महान् से भी महान् हैं।

शेरे कश्मीर शेख अब्दुल्ला कहते हैं—जवाहरलाल गरीबों के साथ घुल-मिल गये हैं। जवाहरलाल किसानों के साथ घुल-मिल गये हैं। जवाहरलाल मजदूरों के साथ घुल-मिल गये हैं। जवाहरलाल सबके साथ घुल-मिल गये हैं। वे बुराई करनेवाले के साथ बुराई नहीं करते। वे बुराई करनेवाले से बदला नहीं लेते। वे बुराई करने-वाले के साथ भलाई करते हैं। वे घृणा करनेवाले के साथ प्रेम करते हैं।

शेरे कश्मीर की बात सच है। पंडितजी किसी से घृणा नहीं करते। वे किसी से बदला नहीं लेते। वे किसी से द्वेष नहीं रखते। वे सबसे प्यार करते हैं।

गुरुदेव कहते थे—जवाहरलाल सच्चे हैं। जवाहरलाल खरे हैं। वे मुसीबत में सच्चाई नहीं छोड़ते। वे हँसी-खुशी में सच्चाई नहीं छोड़ते। वे लालच से सच्चाई नहीं छोड़ते। वे डर से सच्चाई नहीं छोड़ते।

गुरुदेव कहते थे—जवाहरलाल साहसी हैं। जवाहरलाल अपनी बात के पक्के हैं। वे कठिनाई में घबराते नहीं। वे खतरे से डरते नहीं। वे इरादा करके बदलते नहीं। इसलिए वे सबके प्यारे बनेंगे। इसलिए वे सबके दुलारे बनेंगे। इसलिए वे बड़े नेता बनेंगे। इसलिए वे भारत के सिंहासन पर बैठेंगे।

गुरुदेव की बात सच निकली। पंडितजी आज सबके प्यारे हैं। पंडितजी आज सबके दुलारे हैं। पंडितजी आज सबके बड़े नेता हैं। पंडितजी आज भारत के प्रधान मन्त्री हैं।

गांधीजी कहते थे—मेरे वारिस सरदार नहीं हैं। मेरे वारिस राजाजी नहीं हैं। मेरे वारिस राजेन्द्रबाबू नहीं हैं। मेरे वारिस जवाहरलाल हैं। मेरे मरने के बाद वे मेरा काम करेंगे। मेरे मरने के बाद वे मेरी बातें बोलेंगे। मेरे मरने के बाद वे मेरे रास्ते पर ही चलेंगे। क्योंकि वे बहादुर हैं, वे देश-भक्त हैं, वे बुद्धिमान हैं, वे सच्चे हैं, उनमें सूझ-बूझ है।

गांधीजी की बात सच निकली। पंडितजी ही हमारे कर्णधार हैं। पंडितजी ही गांधीजी के वारिस हैं। वे गांधीजी की ही बातें कहते हैं। वे गांधीजी का ही काम करते हैं। वे गांधीजी के ही रास्ते पर चलते हैं।

: २ :

पंडित मोतीलाल नेहरू

पंडितजी के पिता का नाम मोतीलालजी नेहरू था। मोतीलालजी के पूर्वज काश्मीर के रहनेवाले थे। वे मुगल बादशाह के आग्रह से देहली आये थे। बादशाह ने एक नहर के किनारे उनको एक घर दिया था। बादशाह ने उनको एक जागीर भी दी थी। नहर के किनारे रहने से सब उनको नेहरू कहने लगे। वह बड़ी उथल-पुथल का जमाना था। मुगलों का राज मिट रहा था। अंग्रेजों का राज बन रहा था। नेहरू परिवार को इस उथल-पुथल के कारण बड़ी तकलीफ उठानी पड़ी। वह देहली से आगरा आ गया।

आगरा में मोतीलालजी का जन्म हुआ। वह सन् १८६१ की ६ मई का दिन था। इसी दिन बंगाल में गुरुदेव का जन्म हुआ था। दुर्भाग्य से मोतीलालजी के जन्म के ३ महीने पहिले ही उनके पिताजी का स्वर्गवास हो गया था। अतः उनकी देख-रेख का भार उनके चाचा पर पड़ा। उनके चाचा बड़े चतुर आदमी थे। वे खेतड़ी राज्य के दीवान थे। बाद में वे आगरा आ गये और

वकालत करने लगे। उस समय आगरा में हाइकोर्ट थी। बाद में हाइकोर्ट इलाहाबाद चली गई। चाचाजी भी इलाहाबाद चले गये। मोतीलालजी भी उनके साथ इलाहाबाद चले गए।

चाचाजी बड़े अच्छे वकील थे, उनका नाम था नन्दलालजी। उन्होंने मोतीलालजी को भी वकील बनाना चाहा। मोतीलालजी ने अरबी भाषा सीखी थी। मोतीलालजी ने फारसी भाषा भी सीखी थी। अंग्रेजों का राज कायम होने से अब अरबी भाषा कम हो रही थी। अंग्रेजों का राज कायम होने से फारसी भाषा भी कम हो रही थी। अरबी और फारसी मुसलमानों की भाषा थी। अंग्रेजों की भाषा अंग्रेजी थी। इसलिए अब न्यायालयों में अंग्रेजी में काम होने लगा। मोतीलालजी को अंग्रेजी पढ़नी पड़ी। अंग्रेजी भाषा कठिन थी; लेकिन मोतीलालजी ने परिश्रम करके उसे सीख लिया। परिश्रम करने से कठिन बात भी सरल बन जाती है।

मोतीलालजी ने वकालत की परीक्षा में बैठना चाहा। बहुत-सी किताबें पढ़ीं, खूब मेहनत की। परीक्षा में सम्मिलित हुए। कुछ दिनों बाद परीक्षा-फल आया। वे परीक्षा में पहले नम्बर में पास हुए। सब लोगों ने उनकी बड़ी तारीफ की। सब लोगों ने उनका आदर

किया। उनको एक सोने का पदक दिया गया। सोने का पदक बड़े आदर का सूचक है।

मोतीलालजी ने पहले कानपुर में वकालत शुरू की। वहाँ उनको सफलता मिली। खूब मुकदमे आने लगे। खूब रुपया आने लगा। अब वे इलाहाबाद आ गये। इलाहाबाद में बड़ा न्यायालय था। यहाँ बड़े-बड़े मुकदमे आने लगे। रुपया भी खूब आने लगा। वे धन-वान बन गये। साहबी ढंग से रहने लगे।

उन्होंने एक बड़ा मकान खरीदा। उसका नाम रखा 'आनन्द भवन'। आनन्द भवन बड़ा सुन्दर मकान था। उसके एक ओर बगीचा था। एक ओर टेनिस खेलने का मैदान था। एक ओर लॉन था। एक ओर सावन-भादों था। सावन-भादों के बीच में एक शिवजी की मूर्ति थी। शिवजी की मूर्ति बड़े-बड़े पत्थरों पर थी। ये पत्थर इस तरह से रखे गये थे कि एक छोटा-सा पहाड़ बन गया था। शिवजी के सिर से पानी की धारा बहती थी जो तालाब में जाकर मिल जाती थी। तालाब में चारों तरफ सुन्दर फूल खिलते थे। गर्मी में यह जगह बड़ी ठंडी रहती थी इसलिए इसे ग्रीष्म-भवन कहते थे।

मोतीलालजी को अच्छे-अच्छे घोड़ों का शौक था। आनन्द भवन में अच्छे-अच्छे घोड़े थे। मोतीलालजी

घोड़े की सवारी बहुत पसन्द करते थे। आनन्द भवन में अच्छे-अच्छे कुत्ते थे। मोतीलालजी को अच्छे कुत्तें रखने का भी शौक़ था। आनन्द भवन में बहुत सी मोटरें थीं। मोतीलालजी को मोटर की सवारी भी पसन्द थी। वे मोटरों में बैठकर न्यायालय जाते थे। वे मोटरों में बैठकर शहर में घूमते थे। वे मोटरों में बैठकर दूर-दूर के शहरों में भी जाते थे। आनन्द भवन में बहुत-सी गाड़ियां भी थीं। वें गाड़ियों में सैर करने के भी बड़े शौकीन थे।

आनन्द भवन में बहुत-से नौकर भी थे। आनन्द भवन में बहुत से दास-दासी थे। आनन्द भवन में अच्छा ठाटबाट था। धनी और रईस मोतीलालजी से मिलने आते थे। राजा और महाराजा उनसे मिलने आते थे। अंग्रेज और हिन्दुस्तानी अफ़सर उनसे मिलने आते थे। सब मोतीलालजी का आदर करते थे। मोतीलालजी सबका आदर करते थे।

आनन्द भवन में नेहरू परिवार के बहुत से आदमी रहते थे। आनन्द भवन में बहुत से मेहमान आते थे। मोतीलालजी उन सबकी देख-रेख करते। सबके आराम का खयाल रखते थे। इस काम में उनकी पत्नी स्वरूप रानी उनकी बहुत मदद करती थी। मोतीलालजी दिन रात काम में लगे रहते थे। स्वरूपरानी अक्सर बीमार

रहती थीं। फिर भी मोतीलालजी सबका ख़याल रखते थे। फिर भी स्वरूपरानी सबका ख़याल रखती थीं। सब मोतीलालजी के व्यवहार से सन्तुष्ट रहते थे। सब स्वरूपरानी के व्यवहार से सन्तुष्ट रहते थे। मोतीलालजी को इसमें बड़ी खुशी होती थी। स्वरूपरानी को इसमें बड़ी खुशी होती थी।

आनन्द भवन में बहुत से बच्चे थे। मोतीलालजी बच्चों को बहुत प्यार करते थे। छोटे बच्चे उनको बहुत प्यार करते थे। वे छोटे बच्चों से बातें करते थे। वे छोटे बच्चों के साथ खेलते थे। वे बच्चों के साथ गाते थे। वे छोटे बच्चों के साथ हँसते थे। वे छोटे बच्चों को बहुत चाहते थे। वे छोटे बच्चों के काम में बड़ी दिलचस्पी लेते थे।

आनन्द भवन में बड़े-बड़े नेता आते थे। आनन्द भवन में गांधीजी आते थे। आनन्द भवन में मालवीयजी आते थे। आनन्द भवन में देशबन्धुदास आते थे। आनन्द भवन में लाला लाजपत राय आते थे। आनन्द भवन में लोकमान्य आते थे। आनन्द भवन में राजेन्द्रबाबू जाते थे। आनन्द भवन में सरदार पटेल आते थे। लालाजी, देशबन्धुदास और तिलक उस समय के बहुत बड़े नेता थें, मोतीलालजी उस समय के बड़े नेता थें।

आनन्द भवन ने इतने आराम के बाद मुसीबत के दिन भी देखे । मोतीलालजी कांग्रेस में शरीक हुए। कांग्रेस आजादी चाहनेवाले लोगों का बहुत बड़ा संगठन था । उसमें बंगाल के लोग शामिल थे । उसमें पंजाब के लोग शामिल थे । उसमें बिहार के लोग शामिल थे। उसमें मद्रास के लोग शामिल थे । उसमें महाराष्ट्र के लोग शामिल थे । उसमें राजस्थान के लोग शामिल थे । उसमें सीमाप्रान्त के लाग शामिल थे। उसमें सिन्ध के लोग शामिल थे । उसमें हिन्दू थे । उसमें मुसलमान थे । उसमें अंग्रेज थे । उसमें जैन थे । उसमें बौद्ध थे । सब अंग्रेजी राज हटाना चाहते थे । सब हिन्दुस्तानी लोगों का राज कायम करना चाहते थे ।

मोतीलालजी भी उसमें शरीक हुए । वे उसके सभापति बने । सभापति का दर्जा सबसे बड़ा होता है । मोतीलालजी उसके सबसे बड़े बने । वे उसके रास्ता दिखानेवाले बने । सरकार नाराज हुई । उसने मोतीलाल-जी को जेल भेज दिया । जेल में अकेले रहना पड़ा । जेल में हाथ से काम करना पड़ा । जेल में खराब खाना खाना पड़ा । जेल में बहुत सी तकलीफ उठानी पड़ी । लेकिन मोतीलालजी डिगे नहीं । मोतीलालजी हिले नहीं । वे अपनी बात पर अड़े रहे । जो दूसरों के लिए कष्ट

उठाता है, जो दूसरों के लिए आराम छोड़ता है, जो गरीबों से प्रेम रखता है उसके साथ सब प्रेम करते हैं। उसका सब आदर करते हैं । मोतीलालजी सबके बड़े बन गये।

आनन्द भवन कांग्रेस को दे दिया गया। मोतीलालजी का घर सबका घर बन गया । मोतीलालजी का बगीचा सबका बगीचा बन गया। मोतीलालजी का धन सबका धन बन गया और आनन्द भवन के मालिक मोतीलाल-जी देश के मालिक बन गये।

: ३ :

बचपन

सन् १८८९ ई० में १४ नवम्बर के दिन पंडितजी का जन्म हुआ। मोतीलालजी को बड़ी खुशी हुई। स्वरूपरानी को बड़ी खुशी हुई। नेहरू परिवार को बड़ी खुशी हुई। मोतीलालजी के मित्रों को बड़ी खुशी हुई।

जवाहरलाल तो अमीर पिता के बेटे थे। वे तो बड़े घर में पैदा हुए थे। अतः उन्हें स्कूल नहीं भेजा गया। घर पर अंग्रेज दाइयां नौकर रख ली गईं। वे जवाहरलाल की देख-रेख करती थीं। वे जवाहरलाल को सफाई

सिखाती थीं। नियम-पालन सिखाती थीं। वे जवाहरलाल को अनुशासन सिखाती थीं। वे जवाहरलाल को घूमने ले जाती थीं। वे जवाहरलाल को खेल खिलाती थीं। वें जवाहरलाल को काम करना सिखाती थीं।

बालक जवाहरलाल घर की बातों को ध्यान से देखते थे। प्रतिदिन शाम को मोतीलालजी के पास बहुत से मित्र आते थे। प्रतिदिन दावत होती थी। प्रतिदिन हंसी-मज़ाक़ होती थी। मोतीलालजी इन बातों में बड़ा रस लेतें थे। वे बड़े जोर से हंसते थे।

जवाहरलाल छिपकर पर्दे की ओट से यह सब देखते थे। उनको कौतूहल होता कि ये लोग क्या बात रक रहे हैं। कभी-कभी वे पकड़ लिये जाते। उनको मोतीलालजी की गोद में बिठा दिया जाता। मोतीलालजी उनको प्यार करते थे।

मोतीलालजी को गुस्सा बहुत आता था। वे नौकरों पर बिगड़ते थे। वे रिश्तेदारों पर बिगड़ते थे। वे दोस्तों पर बिगड़ते थें। वे झूठी बात सहन नहीं कर सकते थें। वे झूठा काम सहन नहीं कर सकते थे। वे झूठा व्यवहार सहन नहीं कर सकते थे। वे भूल सहन नहीं कर सकते थे। इसलिए जवाहरलाल उनसे डरते थे इसलिए सब लोग उनसे डरते थे।

एक दिन जवाहरलाल ने अपने पिताजी की टेबल पर दो फाउण्टेन पेन देखे। मन में सोचा—'पिताजी दो फाउण्टेन पेन का क्या करेंगे ? उनके लिए तो एक काफी है।' उन्होंने एक फाउण्टेन पेन उठा लिया। उसे अपनी जेब में लगा लिया। जब फाउण्टेन पेन टेबल पर नहीं मिला तो मोतीलालजी बिगड़े। सबसे पूछ-ताछ की। जवाहरलाल से भी पूछा। वे डर गये। पिताजी का गुस्सा उन्हें याद था। बोले—'मुझे नहीं मालूम'। लेकिन फाउण्टेन पेन जवाहरलाल की जेब में मिला। अब क्या था ? मोतीलालजी को बड़ा गुस्सा आया, वे जवाहरलाल पर बहुत बिगड़े। उन्होंने जवाहरलाल को पीटा। जवाहरलाल के शरीर पर पिटाई के निशान बन गये। मां को बड़ा दुःख हुआ। उन्होंने रोज मरहम लगाया। रोज क्रीम लगाई। तब कहीं जवाहरलाल ठीक हुए।

जवाहरलाल को त्यौहार बड़े पसन्द थे। उनको होली का त्यौहार पसन्द था। उनको दिवाली का त्यौहार पसन्द था। उनको नौरोज का त्यौहार पसन्द था। उनको दशहरे का त्यौहार पसन्द था। त्यौहारों पर घर में चहल-पहल रहती थी। त्यौहारों पर घर में मिठाइयां बनती थी। त्यौहारों पर अच्छे कपड़े पहिनाये जाते थे।

त्यौहारों पर बड़ा आनन्द रहता था। जवाहरलाल को सब त्यौहार पसन्द थे; लेकिन वर्षगांठ सबसे ज्यादा पसन्द थी। वर्षगांठ के दिन वे तराजू में रखकर अनाज से तौले जाते थे। वह अनाज गरीबों में बांटा जाता था। अच्छे-अच्छे कपड़े पहिनाये जाते थे। कई तरह की चीजें भेंट की जाती थीं। शाम को दावत होती थी। बहुत से लोग दावत में शामिल होते थे। सब जवाहर को प्यार करते थे, सब जवाहर को कुछ-न-कुछ देते थे। जवाहर मन में कहते—'ऐसा त्यौहार रोज क्यों नहीं आता ?'

जब जवाहर दस वर्ष के हुए तो मोतीलालजी ने 'आनन्द भवन' खरीदा। अब वे आनन्द भवन में रहने लगे। आनन्द भवन के बगीचे में घूमने लगे। आनन्द भवन के हौज में तैरने लगे। वे अच्छा तैरना सीख गये।

जवाहरलाल के लिए ब्रूक्स नाम के एक अंग्रेज अध्यापक रखे गये। वे उनको अंग्रेजी पढ़ाते थे। जवाहर-लाल के लिए एक पंडितजी रखे गये, वे उनको संस्कृत सिखाते थे। मुबारकअली नाम के एक बूढ़े मुंशी उनको कहानियां सुनाते थे। चाची उनको धार्मिक कहानियाँ सुनाती थी। जवाहरलाल को कहानियां बड़ी अच्छी

लगती थीं। सन् '५७ के विद्रोह की कहानियां तो उन्हें बहुत पसन्द आती थीं।

जवाहरलाल को देश की गुलामी पसन्द नहीं थी। जवाहरलाल को अंग्रेजों के अत्याचार पसन्द नहीं थे। उनके मन में देश को आजाद बनाने की बातें उठती थीं। उनके मन में एशिया को आजाद बनाने की बातें उठती थीं। उनके मन में दुनिया को आजाद बनाने की बातें उठती थीं। उन दिनों बोअर युद्ध हो रहा था। बोअर अफ्रीका की एक जाति है। वह अंग्रेजों से लड़ रही थी। जवाहरलाल को लड़ाई की खबरें पढ़ने में बड़ा मज़ा आता। वे सोचते—'हिन्दुस्तानी भी अंग्रेजों से क्यों नहीं लड़ते?' क्यों नहीं उनको भगा देते? इन्हीं दिनों रूस और जापान में भी लड़ाई शुरू हुई। जवाहरलाल को इन खबरों में भी बड़ा मज़ा आता था। जापान की जीत से उनको बड़ी खुशी होती थी। उन्होंने जापान के बारे में कुछ किताबें मंगाई थीं। उन्होंने उस देश की बहुत-सी जानकारी प्राप्त की थी। उनके मन में यह विचार उठता कि मैं भी देश के लिए लड़ूंगा। उनके मन में यह विचार उठता कि—'मैं भी देश को आजाद बनाऊंगा।' उनके मन में यह विचार उठता कि—'मैं भी अंग्रेजों के अत्याचार मिटाऊंगा।'

: ४ :

इंग्लैण्ड में

सन् १६०५ में मोतीलालजी यूरोप-यात्रा के लिए निकले। माता स्वरूपरानी उनके साथ थी। जवाहरलाल उनके साथ थे। जवाहरलाल जी की छोटी बहिन विजय-लक्ष्मी उनके साथ थी। वे इलाहाबाद से बम्बई आये। एक जहाज में सवार हुए और यूरोप पहुँचे। उन्होंने फ्रांस देखा, इङ्गलैण्ड देखा, इटली देखी, स्विट्ज़रलैण्ड देखा, जर्मनी देखी। माता स्वरूपरानी को यह यात्रा बड़ी पसन्द आई। बहिन विजयलक्ष्मी को यह यात्रा बड़ी पसन्द आई। मोतीलालजी को यह यात्रा बड़ी पसन्द आई।

यूरोप में उन्होंने नये-नये शहर देखे। यूरोप में उन्होंने नये-नये ग्राम देखे। यूरोप में उन्होंने नये-नये फल देखे। यूरोप में उन्होंने नये-नये फूल देखे। यूरोप में उन्होंने नये-नये मनुष्य देखे। यूरोप में उन्होंने नई-नई स्त्रियां देखीं। यूरोप की जलवायु सबको अच्छी लगी। यूरोप का रहन-सहन सबको बड़ा अच्छा लगा। यूरोप का वातावरण सबको बड़ा अच्छा लगा। यूरोप के

सफाई और सुघड़ता सबको बहुत अच्छी लगी।

सबने इंग्लैंड में हेरो का विद्यालय देखा। वहां के विद्यालय का भवन बहुत बड़ा था। वहां का छात्रावास बहुत बड़ा था। वहां खेल का मैदान बहुत बड़ा था। वहां बहुत-से शिक्षक थे। वहां बहुत-से विद्यार्थी थे। वहाँ के शिक्षक विद्वान् थे। वहां के शिक्षक उदार थे। वहां के शिक्षक बच्चों को प्यार करते थे। वहां के विद्यार्थी साफ-सुथरे थे। वहां के विद्यार्थी आज्ञाकारी थे। वहां के विद्यार्थी होशियार थे। वे बड़े ठाटबाट से रहते थे। वे बड़ी शान से रहते थे।

मोतीलालजी को विद्यालय अच्छा लगा। स्वरूपरानी को विद्यालय अच्छा लगा। मोतीलालजी ने जवाहरलाल को वहीं भर्ती करवा दिया। वे यूरोप के देशों का भ्रमण करते हुए भारत लौट आये। उनके साथ माता स्वरूपरानी और विजयलक्ष्मी भी लौट आईं।

कुछ दिन बाद जवाहरलाल को वहां अच्छा न लगने लगा। वहां कोई परिचित आदमी न था। वहां कोई मित्र न था। वहां कोई रिश्तेदार न था। वहां सब नये मित्र थे। वहाँ सब नये लोग थे। वहां सब नया वातावरण था। लेकिन जल्दी ही उन्होंने सबसे मित्रता

करली। जल्दी ही उन्होंने सबसे जान-पहिचान करली। वहां की पढ़ाई में उनका मन लगने लगा। वहां के खेल-कूद में उनका मन लगने लगा।

वे वहां प्रतिदिन अखबार पढ़ते थे। वे दुनिया के समाचारों में दिलचस्पी लेते थे। वे खेल-कूद और पढ़ाई में भी दिलचस्पी लेते थे। थोड़े दिनों में वे अपने साथियों से अच्छा खेल खेलने लगे। वे अपने साथियों से अच्छा पढ़ने लगे। वे सब कामों में अपने साथियों से आगे रहने लगे। अध्यापक उनसे प्रसन्न रहने लगे। खिलाड़ी उनसे प्रसन्न रहने लगे। दूसरे लोग उनसे प्रसन्न रहने लगे।

जवाहरलाल को अखबार पढ़ने का बड़ा शौक था। वे इंग्लैंड की खबरों को दिलचस्पी से पढ़ते थे। वे भारत की खबरों को दिलचस्पी से पढ़ते थे। वे यूरोप की खबरों को दिलचस्पी से पढ़ते थे। उन दिनों देश में स्वतन्त्रता का आन्दोलन चल रहा था। कभी बंगाल में कोई बड़ी घटना होती। कभी पंजाब में कोई बड़ी घटना होती। कभी महाराष्ट्र में कोई बड़ी घटना होती। कभी मद्रास में कोई बड़ी घटना होती। कभी किसी नेता के देश-निकाले का समाचार मिलता। कभी किसी नेता के जेल जाने का समाचार मिलता। उस समय देश में स्वदेशी

का आन्दोलन चल रहा था । उस समय सामाजिक सुधार का आंदोलन चल रहा था । भारत की जनता सुधार चाहती थी। भारत की जनता अंग्रेजों के राज्य का अंत चाहती थी। भारत की जनता अंग्रेजों के जुल्मों का अन्त चाहती थी । जवाहरलाल इसे पढ़कर गुस्से से भर जाते थे । जवाहरलाल इसे पढ़कर करुणा से भर जाते । उनको अंग्रेजों पर गुस्सा आता । उनको भारतवासियों पर दया आती । दिन-रात यही तूफान उनके मन में रहता। लेकिन ये सब बातें किससे कहें ? वहां कोई भारतवासी नहीं था। वहां कोई अच्छा मित्र नहीं था ।

सन् १६०७ में वे केम्ब्रिज के ट्रिनिटी कालेज में भर्ती हुए। वहां वे प्राकृतिक विज्ञान पढ़ने लगे । वहां वे रसायन शास्त्र पढ़ने लगे । वहां वे भूगर्भशास्त्र पढ़ने लगे । वहां वे वनस्पति शास्त्र पढ़ने लगे । वे विज्ञान विषय पढ़ रहे थे; लेकिन साहित्य में भी उनकी रुचि थी। इतिहास में भी उनकी रुचि थी। अर्थशास्त्र में भी उनकी रुचि थी। वे अलग से इन विषयों का अध्ययन करते थे। वे इन विषयों पर भी बहस करते थे ।

उन दिनों भारत के बड़े-बड़े नेता इंग्लैण्ड आते थे। वे वहां भाषण देते थे। वे देश की दुर्दशा बताते थे । वे देश-सेवा की प्रेरणा देते थे । जवाहरलाल इन लोगों से

मिलते थे। वें इन लोगों के विचार सुनते थे। वे इन लोगों की ही तरह देश की सेवा करने के लिए व्याकुल हो जाते थे। वे इन लोगों की ही तरह देश के लिए कष्ट उठाने को व्याकुल हो जाते थे।

उन दिनों भारत के वाइसराय लार्ड कर्ज़न थे। उन्होंने बंगाल के दो टुकड़े कर दिये। लोगों में बड़ा असन्तोष फैला। लोगों में बड़ा क्षोभ फैला। लोगों में बड़ा क्रोध फैला। जवाहरलाल को इस समाचार से बड़ा दुःख हुआ। जवाहरलाल को इस समाचार से बड़ा क्रोध आया। इन्ही दिनों मोतीलालजी का एक लेख अखबारों में निकला। उसमें अंग्रेजों की तारीफ थी। उसमें अंग्रेजी सरकार की तारीफ थी। जवाहरलाल उसे पढ़कर बहुत बिगड़े। उन्होंने पिताजी को लिखा—"आपके इस लेख से अंग्रेज बहुत खुश होंगे। आपके इस लेख से सरकार बहुत खुश होगी।" पिताजी बिगड़े। उन्होंने सोचा कि लड़का उद्दण्ड हो रहा है। उन्होंने सोचा कि लड़का असभ्य हो रहा है। उन्होंने सोचा कि लड़का बिगड़ रहा है। लेकिन वे शान्त रहे। उन्होंने जवाहरलाल की उद्दण्डता सहन करली। उन्होंने जवाहरलाल की असभ्यता सहन करली।

केम्ब्रिज की शिक्षा पूरी करके जवाहरलाल कानून

पढ़ने लगे। दो वर्ष में उन्होंने यह भी पूरा कर लिया। कानून पढ़ने के दिनों में उनको काफी समय मिलता था। काफी छुट्टियां मिलती थीं, इसलिए इन दिनों वे खूब घूमे-फिरे। इन दिनों उन्होंने बहुत-से मित्र बनाये। इन दिनों उन्होंने साम्यवाद का अध्ययन किया। साम्यवाद कहता है—सब आदमी बराबर हैं। साम्यवाद कहता है—सब आदमियों को बराबर सुख मिलना चाहिए। साम्यवाद कहता है—सब आदमियों को बराबर मौका मिलना चाहिए। साम्यवाद कहता है—गरीब-अमीर का भेद नहीं रहना चाहिए। साम्यवाद कहता है—बड़े-छोटे का भेद नहीं रहना चाहिए। जवाहरलाल पर इस विचार का बड़ा असर हुआ। इन्हीं विचारों को लेकर वे सन् १९१२ में भारत लौट आये।

: ५ :

विवाह

सन् १९१२ में जवाहरलालजी बैरिस्टरी पास करके भारत आ गये। पिताजी की तरह उन्होंने भी वकालत शुरू की। लेकिन वकालत में उनका मन नहीं लगा। उनका मन तो देश की बातों में लग चुका था।

उनका मन तो देश की दुर्दशा पर रोता था। उनका मन तो सुधार के लिए व्याकुल रहता था।

उस समय देश में कोई बड़ा आन्दोलन नहीं चल रहा था। उस समय देश में कोई बड़ी हलचल नहीं थी। उस समय देश में उदासी थी। उस समय देश में निराशा थी। क्योंकि गरम विचार के लोग कुचल डाले गये थे। क्योंकि नरम विचार के लोग सरकार के पक्ष में हो गये थे। बड़े दिन की छुट्टियों में बांकीपुर में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। गोपालकृष्ण गोखले उस अधिवेशन में आये। जवाहरलाल जी भी इसमें गये। लेकिन उनको अधिवेशन में उत्साह नहीं दिखाई दिया। गोखलेजी से वे जरूर प्रभावित हुए।

सन् १९१६ में जवाहरलाल जी के विवाह की चर्चा हुई। उस समय देहली में पंडित जवाहरलाल जी अटल नाम के एक काश्मीरी ब्राह्मण रहते थे। वे भले आदमी थे। उनकी एक लड़की थी कमला। कमला बड़ी सुन्दर थी। वह बड़ी भोली-भाली थी। वह बड़ी कुशाग्र-बुद्धि थी। वह बड़ी तेजस्वी थी। वह बड़ी गुणवती थी। मोतीलाल-जी ने उसे देखा। उन्हें वह बड़ी अच्छी लगी। विवाह की बात-चीत शुरू हुई। विवाह तय हो गया।

महीनों पहिले से विवाह की तैयारियां शुरू हुईं।

रोज़ आनन्द भवन में बहुत-से जौहरी आते। रोज आनन्द भवन में बहुत-से दर्जी आते। रोज आनन्द भवन में बहुत-से व्यापारी आते। रोज आनन्द भवन में बहुत-से मजदूर आते। बड़ी धूम-धाम रहती। बड़ी चहल-पहल रहती। बहुत-से नौकर-चाकर और गुमाश्ते व्यवस्था करने में लगे रहते। बहुत-से गहने खरीदे गये। बहुत-सा कपड़ा खरीदा गया। बहुत-सा सामान खरीदा गया। बड़ी भारी सजावट की गई।

विवाह के एक सप्ताह पहिले बरात रवाना हुई। बहुत-से मेहमान साथ थे। एक स्पेशल ट्रेन में सब लोग बैठे। ट्रेन बड़ी सजाई गई थी। सब लोग देहली पहुंचे। बरात के रहने के लिए कई मकान दिये गए। लेकिन वे कम रहे, क्योंकि बरात में बहुत-से मेहमान थे। क्योंकि देहली में भी बहुत-से आदमी बरात में शामिल हो गये थे; इसलिए बहुत से तम्बू लगवाये गये। उनमें भी मेहमानों को ठहराया गया। बरात के ठहरने की जगह एक छोटा-सा गांव ही बन गया। उस जगह का नाम रखा गया 'नेहरूनगर'। दस दिन तक रोज दावतें हुईं। रोज खुशियां मनाई गईं। रोज जल्से होते रहे। रोज गाना-बजाना होता रहा। विवाह का दिन आया, दूल्हे और दुलहिन को अच्छे कपड़े पहिनाये

गये। भारतीय रीति से विवाह हुआ। सब लोग आनन्द में मस्त होगये। सब लोग खुशी से फूल उठें।

दस दिन बाद बरात लौटी। सब इलाहाबाद वापिस आये। इलाहाबाद में भी बहुत दिनों तक दावतें होती रहीं। बहुत दिनों तक गाना-बजाना होता रहा। बहुत दिनों तक खुशियां मनाई जाती रहीं।

विवाह के कुछ समय बाद जवाहरलाल जी अपने परिवार के साथ काश्मीर-यात्रा के लिए रवाना हुए। जवाहरलाल जी को पहाड़ बड़े अच्छे लगते हैं। उनको पेड़-पौंदे अच्छे लगते हैं। उनको नदी और तालाब अच्छे लगते हैं। उनको प्राकृतिक दृश्य अच्छे लगतें हैं। काश्मीर के दृश्य तो उनको सबसे ज्यादा अच्छे लगतें हैं। उन्होंने परिवार को श्रीनगर में छोड़ दिया। स्वयं अपने एक चचेरे भाई के साथ पहाड़ों की सैर करने के लिए निकले। कई सप्ताह तक वे सैर करते रहे। इस सैर में एक बड़ी दुर्घटना होगई। वे सैर करते-करते दूर पहुंच गये। यहां उनको मालूम हुआ कि अमरनाथ की गुफा यहां से आठ मील दूर है। उन्होंने अमरनाथ की गुफा तक पहुंच जाने की बात ठान ली। सामने पहाड़ थां। चारों तरफ बर्फ था। जोर का जाड़ा पड़ रहा था। रास्ता काफी खतरों से भरा था। लेकिन वे

तो ठान चुके थे। डेरे-तम्बू यहीं छोड़ दिये गए। बहुत-सा सामान भी यहीं छोड़ दिया गया। वे थोड़े से सामान के साथ चले। वे थोड़े से साथियों के साथ चले।

पंडितजी ने रस्सियों का सहारा लेकर रास्ते में पड़नेवाली नदियां पार की। लेकिन जैसे जैसे वे आगे बढ़ते जाते थे वैसे-वैसे कठिनाई भी बढ़ती जाती थी। वैसे-वैसे रास्ता भी कठिन होता जाता था। हवा इतनी ठंडी थी कि सांस लेना भी मुश्किल हो रहा था। बर्फ इतना गिर रहा था कि आगे बढ़ना मुश्किल था। लेकिन उत्साह इतना था कि लौट चलने का विचार भी पंडितजी के मन में नहीं आ रहा था।

एक दिन सुबह चार बजे उन्होंने चलना शुरू किया। बहुत सी नदियां पार की। बहुत सी चढ़ाई तय-की। शाम को चार बजे उनके सामने एक बर्फ का सरोवर दिखाई दिया। वह लगभग आधा मील लम्बा था। पंडितजी बहुत थक गये थे। उनके साथी भी बहुत थक गये थे। लेकिन वे रुके नहीं। आगे बढ़ते ही गये। सरोवर का पार करना बड़ा खतरनाक था। क्योंकि उसमें बहुत सी दरारें थी। नये गिरनेवाले बर्फ से वे ढक गई थीं। उसपर पैर रखना मानो मौत के मुहँ में जाना था। पंडितजी का पैर ऐसी ही दरार पर पड़ गया वे

उसमें नीचे चले गये। उनका पता भी नहीं लगता; लेकिन उन्होंने साहस नहीं छोड़ा। वे रस्सी को मजबूती से पकड़े रहे। साथियों ने रस्सी को ऊपर खींचा। पंडितजी बाहर निकल आये। फिर भी पंडितजी डरे नहीं। फिर भी पंडितजी झिझके नहीं। फिर भी पंडितजी डिगे नहीं। वे आगे बढ़ते ही गये। लेकिन आगे और भी बड़ी दरारें आईं। उनका पार करना कठिन हो गया। तब कहीं वे लौटे।

ऐसी ही एक दुर्घटना नार्वे में हो चुकी थी। केम्ब्रिज से उपाधि लेने के बाद वे सैर के लिए निकल पड़े। एक अंग्रेज मित्र के साथ नार्वे गये। थोड़ी देर बाद ही वे पहाड़ों में घूमने के लिये निकल पड़े। उधर से लौटे तो नहाने की इच्छा हुई। होटलवाले से कहा कि वे नहाना चाहते हैं। उसने कहा कि उसके यहाँ नहाने का कोई प्रबन्ध नहीं है। पंडितजी अपने मित्र के साथ पास की एक नदी में नहाने के लिये चल पड़े। वहां पहुंचकर वे दोनों नदी में कूद पड़े। नदी का पानी बड़ा ठंडा था। जमीन बड़ी रपटीली थी। बहाव बड़ा तेज था। वे बहने लगे। ठण्डे पानी से हाथ-पैर निर्जीव हो गये। बड़ी परेशानी हुई। उनका अंग्रेज मित्र यह देखकर हैरान हो गया। बेचारा नदी में से बाहर आया। किनारे पर दौड़-

कर उनके पास पहुंचा। उसने जैसे-तैसे पंडितजी का एक पैर पकड़कर उन्हें बाहर निकाला।

जवाहरलालजी कठिनाई से डरते नहीं। वे मुसीबत से घबराते नहीं। वे चिन्ताओं से उदास नहीं होते। वे बाधाओं से निराश नहीं होते। इनसे तो उनमें दूना उत्साह आ जाता है। इनसे तो उनमें दूना बल आ जाता है। इनसे तो उनमें दूना जोश आ जाता है। वे इन्हें देखकर रुकते नहीं। वे इन्हें देखकर झुकते नहीं। वे इन्हें देखकर थकते नहीं। वे तो बाधाओं को चुनौती देते हैं। वे तो मुसीबतों का मुकाबला करते है। वे तो कठिनाई से लड़ते हैं।

: ६ :

मैदान में

सन् १९१६ में लखनऊ कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। इस अधिवेशन में गांधीजी भी आये। जवाहरलाल-जी ने गांधीजी के बारे में बहुत कुछ पढ़ा था। उन्होंने गांधीजी के बारे में बहुत कुछ सुना था। गांधीजी के दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह का उनपर बड़ा असर हुआ था। वे गांधीजी से मिले। उनको ऐसा लगा कि यह तो

बड़ा सीधा-सादा आदमी है। उनको ऐसा लगा कि यह तो बड़ा भोला-भाला आदमी है। उनको ऐसा लगा कि यह तो राजनीति से दूर रहनेवाला आदमी है। लेकिन थोड़े दिन बाद गांधीजी ने चम्पारन में सत्याग्रह शुरू किया। थोड़े दिन बाद उन्होंने खेड़ा में सत्याग्रह शुरू किया। उन्होंने किसानों को सही रास्ता दिखाया। उन्होंने किसानों में बड़ी जाग्रति पैदा की। उन्होंने किसानों को सफलता दिलवाई। तब पंडितजी पर इन बातों का असर हुआ। वे मन-ही-मन गांधीजी के भक्त बन गये।

लखनऊ कांग्रेस के बाद श्रीमती सरोजिनी नायडू इलाहाबाद आईं। उन्होंने वहां कई भाषण दिये। उनके भाषणों में जोश था। उनके भाषणों में देश-प्रेम था। उनके भाषणों में क्रान्ति थी। सब लोगों पर उसका बड़ा असर हुआ। जवाहरलाल जी पर भी उसका बड़ा असर हुआ।

दुनिया के दूसरे देशों पर भी जवाहरलाल जी का नजर थी। इन्हीं दिनों आयरलैण्ड में जनता ने बड़ा विद्रोह किया। रोजरकेसमेन्ट जर्मनी से एक गोला-बारूद का जहाज वहां लाया। ये सब चीज़ें देशभक्तों की मदद के लिए थीं। वह भी एक बड़ा देश-भक्त था। लेकिन अंग्रेज सरकार ने उसे किनारे पर ही पकड़ लिया। उस

पर मुकदमा चलाया। उसने बड़ा ही प्रभावशाली बयान दिया। उसने कहा–'हम आज़ादी चाहते हैं। हम अंग्रेजों का राज्य नहीं चाहते। हम उसे मिटाकर चैन लेंगे। इस काम में हमें कोई नहीं रोक सकता। इस काम में कोई बाधा नहीं डाल सकता। हमारे राष्ट्र की आत्मा अजेय है। हमारे लोगों का मन अजेय है।'' जवाहरलाल जी पर इस भाषण का बड़ा असर हुआ।

जवाहरलाल जी देश के लिए कुछ करने को उतावले हो गये। वे देश की गरीबी भगाने को उतावले हो गये। वे लोगों में जाग्रति लाने के लिए उतावले हो गये। वे सरकार की मनमानी आज्ञाएं भंग करने के लिए उतावले होगये। वे सरकार को मिटाने के लिए उतावले हो गये।

उन्होंने आनन्द भवन की विलासिता छोड़ दी। उन्होंने आनन्द भवन की मोटरें छोड़ दीं। उन्होंने आनन्द भवन के नौकर-चाकर छोड़ दिये। उन्होंने आनन्द भवन का आनन्द छोड़ दिया। वे अपने हाथों अपना काम करने लगे। वे जो मिल जाता वही खाने लगे। वे जो मिल जाता उसी पर सवार होकर गांवों का दौरा करने लगे। उन्होंने अंग्रेजी कपड़े छोड़ दिये। उन्होंने अंग्रेजी बोलना छोड़ दिया। उन्होंने अंग्रेजी खाना छोड़ दिया। वे किसानों में घुलने-मिलने लगे। वे

उनमें भाषण देने लगे। वे उनको जगाने लगे।

उन्होंने किसानों से कहा—बुरे रीति-रिवाज छोड़ो। बुरे आचार-व्यवहार छोड़ो। बुरे काम-धन्धे छोड़ो। उन्होंने किसानों से कहा—जमीदारों से मत डरो। साहूकारों से मत डरो। अफसरों से मत डरो। सरकार से मत डरो। उन्होंने किसानों से कहा—पंचायतें बनाओ। आपस में प्रेम से रहो। अपने झगड़े खुद निपटाओ। सरकारी मदद मत मांगो। उन्होंने किसानों से कहा—सरकार के बुरे कानून मत मानो। सरकार के सामने मत झुको। सरकार से लड़ने को तैयार रहो।

किसानों पर उनकी बात का बड़ा असर हुआ। उन्होंने बुरे रीति-रिवाज छोड़ना शुरु किया। उन्होंने बुरे आचार-व्यवहार छोड़ना शुरू किया। उन्होंने बुरे काम-धन्धे छोड़ना शुरू किया। उन्होंने जमींदारों से डरना छोड़ दिया। उन्होंने साहूकारों से डरना छोड़ दिया। उन्होंने अफसरों से डरना छोड़ दिया। उन्होंने सरकार से डरना छोड़ दिया। उन्होंने पंचायतें बनाईं। उन्होंने प्रेम से रहना शुरू किया। उन्होंने अपने झगड़े खुद मिटाना शुरू किया। उन्होंने सरकार से मदद मांगना बन्द कर दिया। उन्होंने सरकार के बुरे कानून मानना बन्द कर दिया। उन्होंने सरकार के सामने झुकना बन्द

कर दिया। उन्होंने सरकार से लड़ने की तैयारी शुरू कर दी।

इधर पहला महायुद्ध समाप्त होगया था। दुनिया में शान्ति हो रही थी। लेकिन भारत में अशान्ति बढ़ रही थी। लोग सोच रहे थे कि सरकार जनता की तकलीफ मिटाएगी। जनता को ज्यादा अधिकार देगी। उसे आजाद बनाएगी। लेकिन सरकार ने और कड़े कानून बनाये। उसने और ज्यादा जुल्म शुरू किये। जलियां-वाले बाग में एक सभा हो रही थी। उसमें उन लोगों को घेर कर गोलियां चलाईं। सैकड़ों आदमी मारे गये। सैकड़ों ज़ख्मी हुए। सैकड़ों माताएं अनाथ होगईं। सैकड़ों पत्नियां विधवा होगईं। सैकड़ों बहिनें असहाय होगईं।

इस घटाना से देश में बड़ी हलचल मची। इस घटना से देश में बड़ा क्षोभ फैला। इस घटना से देश में बड़ा जोश फैला। गांधीजी ने असहयोग आन्दोलन शुरू किया। गांधीजी ने लोगों से कहा—अब इस जुल्म को सहन करने से इन्कार कर दो। अब सरकार के कानून को मानने से इन्कार कर दो। अब सरकार के काम में हाथ बटाने से इन्कार कर दो। लोगों में बिजली दौड़ गई। लोगों में उत्साह आ गया। वे सरकार का मुकाबला करने के लिए

तैयार हो गये। वे सरकार के साथ असहयोग करने को तैयार हो गये।

जवाहरलाल तो यही चाहते थे। उनको आन्दोलन के शुरू होने से बड़ी खुशी हुई। वे आन्दोलन में कूद पड़े। उन्होंने गांवों का दौरा तेजी से शुरू कर दिया। वे दिन भर काम में लगे। हर रोज मीटिंग होती। हर रोज सभा होती। हर रोज संगठन का काम होता। हर रोज योजना बनती और हर रोज उसके अनुसार कार्य होता। वे आन्दोलन में इतने मग्न हो गये कि उन्हें माता-पिता का खयाल न रहा। उन्हें पत्नी और पुत्री का खयाल न रहा। उन्हें बहिन-भाई का खयाल न रहा। उन्हें सगे सम्बन्धियों का खयाल न रहा। उन्हें खाने-पीने का खयाल न रहा। वे प्रतिदिन भीड़ से घिरे रहते। उनको क्षण भर की भी फ़ुरसत नहीं मिलती।

सरकार उनके काम से तंग आ गई थी। सरकार उनको सज़ा देना चाहती थी; लेकिन उसकी हिम्मत न होती थी। आखिर उसने हिम्मत की। एक दिन उसने कांग्रेस कार्यालय को घेर लिया। तलाशी शुरू हुई। बहुत-से कागज पत्र ले लिये। जवाहरलालजी को गिरफ्तार कर लिया। मोतीलालजी को भी गिरफ्तार कर लिया। दोनों पिता-पुत्र जेल गये। उनपर मुकदमा चला।

छः छः महीने की सजा हुई। जेल में जाने से उनको कोई दुःख नहीं हुआ। वहां के कष्टों से वे परेशान नहीं हुए। उनको उल्टे बड़ी खुशी हुई। उन्होंने इसमें गौरव अनुभव किया। उन्होंने इसमें बड़प्पन अनुभव किया। क्योंकि वे देश के लिए जेल गये थे। क्योंकि वे देश के लिए कष्ट उठा रहे थे। क्योंकि वे गरीबों लिए कष्ट उठा रहे थे।

जवाहरलालजी तीन मास तक जेल में रहे। पंडित मोतीलालजी भी जेल में थे। अदालत में उनके मामले पर फिर से विचार किया गया। न्यायाधीशों ने अनुभव किया कि जवाहरलालजी को भूल से सज़ा दे दी गई है। अतः उन्हें ३ महीने बाद छोड़ दिया गया। जवाहरलालजी को यह अच्छा नहीं लगा। क्योंकि उनके पिताजी जेल में थे। क्योंकि उनके मित्र जेल में थे। बहुत से दूसरे लोग जेल में थे। वे गांधीजी से मिलने अहमदाबाद गये। लेकिन वहां गान्धीजी नहीं मिले। वे पकड़ लिये गये थे। उनपर भी मुकदमा चला। उनको भी लम्बी सज़ा दे दी गई।

इस बात से जवाहरलालजी को और बुरा लगा। उन्होंने प्रयाग लौटकर फिर से काम शुरू कर दिया। उन्होंने व्यापारियों से कहा कि विदेशी माल न खरीदने

की प्रतिज्ञा लो। उन्होंने व्यापरियों से कहा—कि विदेशी माल न वेचने की प्रतिज्ञा लो। उन्होंने व्यापारियों से कहा—कि स्वदेशी माल खरीदने और स्वदेशी माल ही वेचने की प्रतिज्ञा लो। बहुत से व्यापारियों ने प्रतिज्ञा ली। लेकिन बहुत से व्यापारियों ने प्रतिज्ञा भंग कर दी। जवाहरलाल जी ने प्रतिज्ञा भंग करनेवाले व्यापारियों की दुकान पर धरना दिया। जवाहरलाल जी ने उनके ऊपर जुर्माना करवाया। सरकार को फिर गुस्सा आया। उसने उनको फिर पकड़ लिया। उनको फिर जेल भेज दिया।

जेल में वे कुछ दिन पिताजी के साथ रहे। लेकिन बाद में पिताजी छूट गये। जवाहरलाल जी अकेले रह गये। उनको अच्छा भोजन नहीं मिलता था। उनको अच्छा कमरा नहीं मिलता था। उनको अखबार नहीं मिलते थे। सरकार उनको कष्ट दे रही थी। लेकिन वे बगीचा लगाते। वे अपने साथियों को पढ़ाते। वे किताबें पढ़ते। वे बादलों को देखते। वे विचार-मग्न रहते। आखिर सन् १९२३ में वे छोड़ दिये गये।

जब जवाहरलाल जी छूटे तब देश की हवा बदल चुकी थी। तब बड़े-बड़े परिवर्तन हो चुके थे। कांग्रेस में एक नया दल बना था। उसका नाम था स्वराज्य दल। पंडित मोतीलाल नेहरू उसके नेता थे। देशबन्धु उसके

नेता थे। ये लोग कौन्सिलों में जाना चाहते थे। ये लोग वहां बैठकर अच्छे कानून बनाना चाहते थे। ये लोग वहाँ बैठकर सरकार से लड़ना चाहते थे। लेकिन जवाहरलाल तो सिपाही थे। वे तो योद्धा थे। उनको तो लड़ने में मज़ा आता था। उनको तो आन्दोलनों में आनन्द आता था। उनको तो जनता के बीच में काम करने में अच्छा लगता था।

जवाहरलाल जी को खबर मिली कि पंजाब में नाभा के महाराजा को गद्दी से उतार दिया गया है। उनको खबर मिली कि इसके विरोध में सिक्खों ने लड़ाई शुरू कर दी है। उनको खबर मिली कि सिक्ख उनकी मदद चाहते हैं। खबर मिलते ही वे नाभा की ओर चल दिये। उनके साथ दो मित्र थे। रास्ते में उन्हें सत्याग्रहियों का एक दल मिला। वह जैतो जा रहा था। जवाहरलाल जी उसके साथ चल पड़े। जैतो पहुँचने पर पुलिस ने सत्याग्रहियों को रोक दिया। जैतो पहुंचने पर पुलिस ने जवाहरलाल जी और उनके साथियों को भी रोक दिया। जवाहरलाल जी ने कहा—हम तो दर्शक हैं। हम तो यहाँ की हालत देखने आए हैं। लेकिन पुलिस ने उन्हें पकड़ लिया। पुलिस ने उनको बेड़ियां पहनाईं। पुलिस ने उनको बेड़ियां पहिना कर बाजार में से निकाला।

पुलिस ने उनको नाभा भेजा। वहां वे जेल में रखे गये। जेल का कमरा बड़ा गन्दा था। उसमें सील थी। उसमें बहुत से चूहे थे। बड़ी परेशानी रही। उनपर मुकद्मा चला। सजा हो गई; लेकिन सरकार को खयाल आया कि वह भूल कर रही है। उसने उनको छोड़ दिया। वे छूट तो गए लेकिन जेल के कमरों की गन्दगी का ऐसा असर हुआ कि वे एक महीने तक बीमार रहे।

उन दिनों एक कमीशन भारत आया था। उसका नाम था साइमन कमीशन। वह भारत की स्थिति की जांच करने आया था। उसमें सब अंग्रेज थे। उसमें कोई भारतीय नहीं था। उससे कोई लाभ की आशा नहीं थी। अतः देश भर में उसका बहिष्कार किया गया। देश भर में उसके विरोध में जुलूस निकाले गए। देश भर में उसे काले झण्डे दिखाये गए। कमीशन लाहौर गया। देहली गया। लखनऊ गया। कलकत्ता गया। मद्रास गया। बम्बई गया। लाहौर में लाला लाजपत राय बहिष्कार के नेता थे, लखनऊ में जवाहरलाल जी। लाहौर में जुलूस पर लाठियां चलाई गईं। लालाजी को बड़ी चोट लगी। वे उसी के कारण मर गए। लखनऊ में जवाहरलालजी पर भी लाठियां बरसीं। वे भी जख्मी हुए। जवाहरलाल जी हर आन्दोलन में आगे रहे।

: ७ :

लाहौर कांग्रेस

जवाहरलाल जी देश-सेवा में ऐसे मग्न हुए कि उन्हें घर के काम-काज का ख़याल ही न रहा। वे न अपनी सुख-सुविधा को देख सके न दूसरों की। वे न माता-पिता की शुश्रुषा कर सके न भाई-बहनों की। वे न पत्नी का ख़याल रख सके न बच्ची का। परिणाम यह हुआ कि पिताजी का स्वास्थ्य बिगड़ने लगा। माताजी का स्वास्थ्य बिगड़ने लगा। कमलादेवी का स्वास्थ्य बिगड़ने लगा। किसी को जवाहरलाल जी की लम्बी जुदाई पसन्द नहीं थी। किसी को जवाहरलाल जी का कष्ट-सहन पसन्द नहीं था। फिर भी जवाहरलाल जी का कोई काम विरोध करने योग्य नहीं था। उनका कोई काम बुरा कहने योग्य नहीं था। उनका कोई काम प्रतिष्ठा कम करनेवाला नहीं था। अतः सब चुप थे। अतः सब मौन थे।

कमलादेवी के स्वास्थ्य पर इसका बड़ा असर हुआ। क्योंकि वे खुद आन्दोलनों में भाग लेने लगी थीं। वे खुद बहुत परिश्रम करने लगी थीं। वे खुद कष्ट-सहन

करने लगी थीं। वे पति के विचारों में घुल-मिल गई थीं। वे पति के आदर्शों से एक-रूप हो गई थीं। वे पति के कामों में लग गई थीं। उनका स्वास्थ्य-दिन-प्रति-दिन बिगड़ने लगा। डाक्टरों ने कहा—कमलादेवी को यूरोप ले जाना चाहिए। मोतीलालजी ने कहा—कमलादेवी को यूरोप ले जाना चाहिए। माता स्वरूपरानी ने कहा—कमलादेवी को यूरोप ले जाना चाहिए। जवाहरलाल जी चिन्तित हुए। जवाहरलाल जी परेशान हुए। वे यूरोप जाने को तैयार हो गए।

कमलादेवी के साथ वे यूरोप को रवाना हुए। वहां वे स्विट्जरलैंड में रहने लगे। स्विट्जरलैंड बड़ा सुन्दर देश है। वह बड़ा स्वास्थ्यवर्धक देश है। वह बड़ा सुहावना देश है। कमलादेवी अच्छे से स्थान में ठहराई गईं। अच्छे-अच्छे डाक्टर उनका इलाज करने लगे। अच्छी-अच्छी दवाइयां उन्हें दी जाने लगीं। जवाहरलाल जी उनकी देख-रेख करने लगे। जवाहरलाल जी उनकी सेवा-शुश्रुषा करने लगे। जवाहरलाल जी उनका बहुत खयाल रखने लगे।

कमलादेवी का स्वास्थ्य सुधरने लगा। कुछ निश्चिन्त होने पर वे फिर राजनीतिक बातों में दिलचस्पी लेने लगे। एक बार वे लन्दन गए। एक बार वे बर्लिन गये। एक

बार वे रूस गये। लन्दन में मजदूरों की हड़ताल चल रही थी। सरकार उनको दबा रही थी। सरकार उनपर अत्याचार कर रही थी। जवाहरलाल जी इससे दुखी हुए। उन्होंने मजदूरों के साथ सहानुभूति दिखाई। उन्होंने मजदूरों के साथ प्रेम दिखाया। बर्लिन में दलित जातियों का सम्मेलन हो रहा था। उसमें कई देश के लोग आए थे। उसमें कई धर्म के लोग आये थे। उसमें कई जाति के लोग आये थे। जवाहरलाल जी ने भी सम्मेलन में भाग लिया। उन्होंने देखा कि दुनिया के लोग दलित जातियों के लिए चिन्तित हैं। उन्होंने देखा कि दुनिया के लोग दलित जातियों की हालत पर दुखी हैं। वे उनको उठाना चाहते हैं। वे उनको अच्छा बनाना चाहते हैं। वे उनके कष्ट मिटाना चाहते हैं। जवाहरलाल जी ने इस सम्मेलन में बहुत सी अच्छी बातें देखी। जवाहरलाल जी ने इस सम्मेलन में बहुत सी अच्छी बातें सुनी।

थोड़े दिन बाद मोतीलाल जी भी यूरोप आ गये। जवाहरलाल जी फ्रांस देख चुके थे। वे इटली देख चुके थे। वे जर्मनी देख चुके थे। नार्वे देख चुके थे। वे स्विट्ज़रलैंड देख चुके थे। वे यूरोप के बहुत से देश देख चुके थे; लेकिन उन्होंने रूस नहीं देखा था। रूसयूरोप के

दूसरे देशों से भिन्न था। रूस में मजदूरों का राज्य स्थापित हो गया था। रूस में किसानों का राज्य स्थापित हो गया था। रूस में जनता का राज्य स्थापित हो गया था। रूस में गरीब-अमीर का भेद मिट रहा था। रूस में बड़े-छोटे का भेद मिट रहा था। रूस में नया जीवन शुरू हो रहा था। रूस का नया युग शुरू हो रहा था। रूस में नया इतिहास शुरू हो रहा था। खबर मिली कि रूस में शांति की दसवीं वर्ष गांठ मनाई जाने वाली है। बहुत बड़ा उत्सव होने वाला है। जवाहरलाल जी ने वहां जाने का विचार किया। मोतीलाल जी को भी यह बात पसन्द आई। वे भी किसानों-मज़दूरों के राज्य को देखना चाहत थे। वे भी किसानों और मजदूरों की प्रगति को देखना चाहते थे। अतः वे रूस गये। वहां वे एक दिन देर से पहुंचे। अतः फौज का प्रदर्शन न देख सके। उन्होंने लेनिन की समाधि देखी। लेनिन ने वहां की सरकार से लड़ाई की थी। लेनिन ने लोगों को आजाद किया था। लेनिन ने जनता का राज्य कायम किया था। अतः लेनिन रूस के गांधीजी माने जाते हैं। लेनिन रूस के राष्ट्रपिता माने जाते हैं। लेनिन रूस के उद्धारक माने जाते हैं। उन्होंने वहां गिरजाघर देखे। उन्होंने वहां जेलखाने देखे। उन्होंने वहां अजायबघर देखे।

किसान देखे। मज़दूर देखे। सब में नयापन था। सब में प्रसन्नता थी। सब में उत्साह था। सब नये काम में लगे थे। सब नये काम में जुटे थे। यह सब देखकर जवाहरलाल जी को बड़ी प्रसन्नता हुई। यह सब देख कर जवाहरलाल जी को सन्तोष हुआ।

वे रूस से लौटे। कमलादेवी का स्वास्थ्य सुधर गया था अतः स्विट्ज़रलैण्ड से भी लौटे। वे भारत आ गये। यहां फिर देश-सेवा में लग गये। फिर जन-सेवा में लग गये। देश के लोगों पर उनकी सेवा का बड़ा असर हुआ था। देश के लोगों पर उनके कष्ट-सहन का बड़ा असर हुआ था। अतः जनता ने उनका बहुत बड़ा सम्मान किया। जनता ने उनको बहुत बड़ा पद दिया। वे कांग्रेस के सभापति चुने गए। वे राष्ट्रपति चुने गए।

सन् १९२९ में लाहौर में कांग्रेस का अधिवेशन शुरू हुआ। रावी के किनारे 'लाजपत-नगर' बना। बड़े-बड़े दरवाजे बने। सुन्दर-सुन्दर झोपड़ियां बनीं। अच्छे-अच्छे तम्बू लगे। विशाल-विशाल पंडाल बने। नई-नई दुकानें लगीं। प्रान्त-प्रान्त के नेता आए। नगर-नगर के प्रतिनिधि आए। ग्राम-ग्राम के दर्शक आए। धूम-धाम से अधिवेशन शुरु हुआ। साज-बाज से अधिवेशन शुरु हुआ। ठाठ-बाट से अधिवेशन शुरु हुआ।

४४ घोड़ों का रथ बनाया गया। जवाहरलालजी को उसमें बैठाया गया। रथ बड़ा सजा हुआ था। घोड़े बहुत सजे हुए थे। सभी घोड़े सफेद थे। सभी घोड़े स्वस्थ थें। सभी घोड़े तेज थें। शानदार जुलूस निकला। सबसे आगे बैण्ड थें। उसके पीछे शहनाइयां थी। उसके पीछे दूसरे बाजे थें। उसके पीछे स्वयंसेवक थे। उसके पीछे जवाहरलाल जी का रथ था। लाहौर के रास्ते खचाखच भर गये। लाहौर के मकान खचाखच भर गये। लाहौर की छतें खचाखच भर गईं। सबने जवाहरलाल जी को प्रणाम किया। सबने जवाहरलाल जी का स्वागत किया। बहुत से लोगों ने जवाहरलाल जी पर फूल बरसाये। बहुत से लोगों ने जवाहरलाल जी का मालाएं पहिनाईं। बहुत से लोगों ने जवाहरलाल जी का सत्कार किया। लाहौर खुशी से फूल गया। लाहौर आनन्द में मस्त हो गया।

जवाहरलाल जी ने राष्ट्रीय झण्डा फहराया। उन्होंने लोगों से कहा—यह केवल कपड़ा नहीं है। यह भारत की आजादी का चिन्ह है। यह भारत की आजादी का प्रतीक है। यह भारत की एकता की निशानी है। हमें इसे हमेशा ऊंचा रखना है। हमें इसे हमेशा फहराते रहना है। हमें इसे कभी झुकने नहीं देना है। फिर चाहे

हमें कष्ट उठाना पड़ें। चाहे हमें मरना पड़ें। चाहे हमें मिटना पड़ें।

जब अधिवेंशन शुरू हुआ तो पंडाल में हजारों लोग बैठे हुए थें। वहां स्त्रियां थी, वहां पुरुष थें। वहां बालक थे, वहां बूढ़े थें। वहां वंगाली थें, वहां बिहारी थे। वहां मद्रासी थे, वहां महाराष्ट्रीयन थें। वहां राजस्थानी थे, वहां पंजाबी थे। वहां हिन्दू थें, वहां मुसलमान थे। वहां ईसाई थें, वहां पारसी थें। वहां जैन थे, वहां बौद्ध थें। सबमें दृढ़ता थी। सबमें प्रेम था। सबमें जोश था। सबमें लगन थी। जवाहरलाल जी ने भाषण शुरू किया। उनके एक-एक शब्द में देशप्रेम था। उनके एक-एक शब्द में सेवा-भावना थी। उनके एक-एक शब्द में प्रेरणा थी। उनके एक-एक शब्द में पथ-प्रदर्शन था। लोगों को उससे बल मिला। लोगों को उससे उत्साह मिला। लोगों को उससे प्रेरणा मिली। लोगों पर उसका बड़ा असर हुआ।

इस अधिवेंशन में एक महत्वपूर्ण प्रस्ताव पास हुआ। वह था स्वाधीनता का प्रस्ताव। यह प्रस्ताव इस अधिवेशन की जान था। यह प्रस्ताव इस अधिवेशन की शान था। यह प्रस्ताव इस अधिवेंशन का बहुत बड़ा काम था। गांधीजी ने यह प्रस्ताव रखा। मोतीलाल जी ने इसका समर्थन किया। दूसरे लोगों ने भी इसका समर्थन किया।

इस प्रस्ताव में कहा था कि भारत स्वाधीनता चाहता है। वह अब अंग्रेजों का राज्य नहीं चाहता। अब वह किसी दूसरी जाति का राज्य नहीं चाहता। कांग्रेस का लक्ष्य स्वाधीनता प्राप्त करना है। कांग्रेस का लक्ष्य पराधीनता से लड़ना है। इस प्रस्ताव ने जनता को सही रास्ता दिखा दिया। इस प्रस्ताव ने जनता की आखें खोल दीं। इस प्रस्ताव ने सरकार की आंखें खोल दी।

अधिवेशन के कुछ समय वाद गांधीजी ने सरकार से एक नई लड़ाई शुरू की। उन्होंने एक नया आन्दोलन शुरू किया। इस आन्दोलन का नाम था असहयोग आन्दोलन। उन्होंने लोगों से कहा—सरकार तुम्हारे बल से चलती है। उन्होंने लोगों से कहा—सरकार तुम्हारे सहयोग से चलती है। उन्होंने लोगों से कहा—सरकार तुम्हारी सहायता से चलती है। इसलिए अगर सरकार अत्याचार करती है, तो उसे सहायता देने से इन्कार कर दो। अगर सरकार बुरे कानून बनाती है तो उन्हें मानने से इन्कार कर दो। अगर सरकार अन्याय करती है तो उसको साथ देने से इन्कार कर दो। इस आन्दोलन का प्रारम्भ उन्होंने स्वयं किया। उन्होंने स्वयं समुद्र-किनारे तक की पैदल यात्रा की। उन्होंने स्वयं नमक बनाया। उन्होंने स्वयं नमक-क़ानून तोड़ा। उन्होंने स्वयं

सरकार के क़ानून मानने से इन्कर किया। उन्होंने स्वयं सरकार का साथ देने से इन्कार किया।

जवाहरलाल जी ने दाण्डी जाकर यह सब देखा। गांधीजी के बाद देश में सब जगह यह काम शुरू करना था। सब जगह सरकार से लड़ाई छेड़नी थी। सब जगह आन्दोलन चलाना था अतः जवाहरलालजी इलाहाबाद लौटे। उन्होंने अपने प्रान्त में यही काम शुरू कर दिया। कानून-भंग से सरकार बड़ी बिगड़ी। अपने कानून टूटते वह कैसे देख सकती थी। अपना अपमान वह कैसे सह सकती थी। अपना अन्त वह कैसे देख सकती थी। उसने लोगों को डराना शुरू किया। उसने लोगों को धमकाना शुरू किया। उसने लोगों को सजा देना शुरू किया। उसने लोगों पर अत्याचार करना शुरू किया।

पुरुष गोली खाते थें पर क़ानून तोड़ते थे। स्त्रियां लाठी खाती थीं पर कानून तोड़ती थीं। बच्चे कोड़े खाते थें पर कानून तोड़ते थें। सरकार ने मनमानी गोली चलाई। सरकार ने मनमानी लाठी चलाई। सरकार ने मनमानी सजाएं दीं। सरकार ने मनमानी चीजें ज़प्त कीं। सरकार ने मनमाने अत्याचार किये; लेकिन आन्दोलन चलता रहा। जवाहरलाल जी आन्दोलन में शामिल हुए। मोतीलालजी आन्दोलन में शामिल हुए। माता-

स्वरूपरानी आन्दोलन में शामिल हुई। विजयलक्ष्मी आन्दोलन में शामिल हुई। कमलादेवी आन्दोलन में शामिल हुई। कृष्णादेवी आन्दोलन में. शामिल हुई। सब गिरफ्तार हुए। सबको सजाएं हुईं।

छः मास बाद वे फिर छूटे। उन्होंने फिर लोगों की सभा में भाषण दिया। उन्होंने फिर सरकार से लड़ाई शुरू की। उन्होंने फिर आन्दोलन चलाया। सरकार घबराई। सरकार परेशान हुई। इसलिए एक दिन जब वे अपने बीमार पिताजी से मिलने जारहे थे उसने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। फिर मुकदमा चला। फिर सज़ा हुई। इस बार की सज़ा १८ मास की थी।

: ८ :

मोतीलालजी का स्वर्गवास

छः महीने बाद सरकार ने जवाहरलाल जी को छोड़ा। घर आते ही उन्हें एक बड़े दुःख का सामना करना पड़ा। जवाहरलाल जी ने बड़े-बड़े दुःख सहे थे। उन्होंने लाठियां खाई थीं। वे गोलियों के सामने खड़े हुए थे। वे जेल गए थे। उन्होंने और भी दुःख उठाये थे। लेकिन यह दुःख उन सबसे बड़ा था। यह दुःख उन सबसे भारी

था। उनके पिताजी एक लम्बे अर्से से बीमार थे। जवाहरलाल जी के वियोग ने उनकी बीमारी बढ़ा दी थी। जवाहरलाल जी के प्रेम ने उनकी बीमारी बढ़ा दी थी। जवाहरलाल जी की याद ने उनकी बीमारी बढ़ा दी थी। क्योंकि जवाहरलाल जी उनके प्यारे बेटे थे। जवाहरलाल जी उनके वीर बेटे थे। जवाहरलाल जी उनके विद्वान बेटे थे। जवाहरलाल जी उनके यशस्वी बेटे थे।

मोतीलालजी बीमारी से लड़ते-लड़ते थक गए थे। उनका चेहरा सूज गया था। वे बहुत कमजोर हो गए थे। वे चल नहीं सकते थे। वे बोल नहीं सकते थे। वे खाना नहीं खा सकते थे। वे पी नहीं सकते थे। बड़ी कठिनाई से वे थोड़ा बोलते थे। बड़ी कठिनाई से वे थोड़ा खाते थे। बड़ी कठिनाई से वे थोड़ा पीते थे। जवाहरलाल जी उनकी यह हालत देखकर कुछ ठिठके। लेकिन दूसरे ही क्षण वे उनसे लिपट गए। पिताजी भी उनसे लिपट गए। जवाहरलाल जी की आंखों में आंसू आ गए। मोतीलाल जी की आंखों में आंसू आ गये। पिता-पुत्र का यह मिलन बड़ा मेहंगा था।

जिस दिन जवाहरलाल जी छूटे थे उस दिन और भी नेता छूटे थे। मोतीलाल जी की बीमारी की खबर सबको मिली थी। सब उनके दर्शन करने आये। गांधीजी भी

आये । आनन्द भवन में बड़ी भीड़ हो गई । सब लोगों के मन में दुःख था । सबके मन में उदासी थी । क्योंकि मोतीलाल जी की हालत हर रोज बिगड़ती जा रही थी । मोतीलाल जी की बीमारी हर रोज बढ़ती जा रही थी ।

डाक्टरों ने कहा—इनको लखनऊ ले जाना चाहिए । वहां एक्सरे हो सकेगा । वहां अच्छा इलाज हो सकेगा । मोतीलालजी को मोटर में बिठलाया गया । उन्हें लखनऊ ले जाया गया । बड़े-बड़े डाक्टरों ने उनका इलाज किया । अच्छी-अच्छी दवाएँ दी । लेकिन वे बच न सके । वे स्वर्ग सिधार गये ।

उनके शव को मोटर से इलाहाबाद लाया गया । वह तिरंगे झंडे से लिपटा हुआ था । उसके पास जवाहरलाल जी बैठे थे । उनकी आंखों में विषाद था । उनके मन में उदासी थी । जब इलाहाबाद पास आया तो रास्ते के दोनों ओर बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गई । जैसे-जैसे वे आगे बढ़ते थें भीड़ बढ़ती जा रही थी । हजारों लोग रास्तों पर खड़े थे । सब के चेहरों पर उदासी थी । सबके मन में दुख था । सबकी आखों में आंसू थे ।

अब दाह-क्रिया की तैयारी हुई । अर्थी सजाई गई । एक बहुत बड़ा जुलूस निकला । इलाहाबाद के बहुत से लोग अर्थी के साथ थे । पास के गांवों के बहुत से लोग

अर्थी के साथ थे। दूसरे शहरों के बहुत से लोग अर्थी के साथ थे। सब मोतीलालजी को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करने आये थे। सब उनके अन्तिम दर्शन करने आये थे। सब उनकी दाह-क्रिया में सम्मिलित होने आये थे। इतना बड़ा जुलूस पहिले कभी इलाहाबाद में न निकला था। इतने ज्यादा लोग पहिले कभी इलाहाबाद में दुखी न हुए थे। इतने ज्यादा लोग पहिले कभी इलाहाबाद में श्रद्धाञ्जलि अर्पित करने इकट्ठे न हुए थे।

संगम पर चिता बनी। वह धक-धक करके जल उठी। सब लोग आंसू भरी आंखों से उसे देखते रहे। जब दाह-क्रिया हो गई तो गांधीजी खड़े हुए। उन्होंने लोगों से कहा—मोतीलालजी हमारे वीर सेनापति थे। वे हमारे बड़े योद्धा थे। वे आजादी के लिए लड़े। वे आजादी के लिए मरे। अतः हम सबको भी यही करना चाहिये। हम सबको भी आजादी प्राप्त करने की प्रतिज्ञा लेनी चाहिए। मालवीयजी भी कुछ बोले। उन्होंने भी लोगों से यही बात कही। दो दिन तक सारे देश में शोक मनाया गया। दो दिन तक सारे देश में हड़ताल रही।

जवाहरलाल जी ने इस शोक को बहादुरी से सहा। जवाहरलाल जी ने इस शोक को धैर्य से सहा। जवाहरलालजी ने इस शोक को शान्ति से सहा। वे फिर देश-

सेवा में लग गए। वे फिर आजादी की लड़ाई में लग गए। इन दिनों गांधी-इरविन समझौता हुआ। आंदोलन बन्द कर दिया गया। गांधीजी गोलमेज परिषद् में भाग लेने लंदन गए; लेकिन सरकार ने समझौता का पालन नहीं किया। जवाहरलाल जी को यह अच्छा न लगा। उन्होंने उसका विरोध किया। अतः उनको आज्ञा हुई कि वे इलाहाबाद न छोड़ दें। लेकिन उन्होंने इसे न माना। वे गांधीजी से मिलने के लिए चल पड़े। रास्ते में उन्हें पकड़ लिया गया। उन्हें दो साल की सज़ा दे दी गई।

गांधीजी के बम्बई आते ही फिर आन्दोलन शुरू हो गया। फिर जवाहरलाल जी की बहिनों ने आंदोलन में भाग लिया। फिर दोनों को सजाएं हुईं। माता स्वरूपरानी ने इलाहाबाद में एक जुलूस निकाला। सरकार ने उसपर लाठी बरसाई। एक लाठी माताजी के सिर में लगी। वे घायल हो गईं। उनको घर पहुँचाया गया। लोगों में इस समाचार से बड़ा शोक फैला। उन्होंने क्रोध से पुलिस पर हमला कर दिया। पुलिस ने गोली चलाई। बहुत से लोग मरे। बहुत से घायल हुए। आखिर बड़ी मुश्किल से शान्ति हुई। जवाहरलाल जी को इस समाचार से बड़ी चोट लगी। २ महीने बाद वे जेल में जवाहर लाल जी से मिलीं। तब उन्हें शान्ति मिली।

कुछ दिन बाद वे फिर छूटे। लेकिन फिर उन्होंने भाषण दिए। वे फिर जेल गये और फिर छूटे। जेल जाना और छूटना उनका हमेशा का काम बन गया। जेल जाना और छूटना एक खेल बन गया।

: ६ :

कमलादेवी और माताजी का अवसान

सन् १९३४ के जनवरी मास में बिहार प्रान्त में भूकम्प आया। बहुत से मकान गिर गए। बहुत से आदमी दब गए। बहुत से आदमी मर गये। बहुत से गांव नष्ट हो गये। बहुत से शहर नष्ट हो गये। बहुत से लोग भूखों मरने लगे। बहुत से जानवर भूखों मरने लगे। जवाहरलाल जी को यह खबर मिली। वे उसी समय चल दिये। उन्होंने गांव-गांव का दौरा किया। उन्होंने शहर-शहर का दौरा किया। उन्होंने मकानों में दबी हुई लाशें निकलवाईं। उन्होंने लोगों को सान्त्वना दी। उन्होंने लोगों को भोजन दिलवाया। उन्होंने उनको कपड़ा दिलवाया।

इस काम में वे सुबह से रात तक लगे रहते थे। इस काम में वे अपना खाना-पीना भूल गये थे। इस

काम में वे अपना आराम और नींद भूल गये थे। वे मोटर से दौरा करते। वे पैदल दौरा करते। वे जो मिल जाता उसी से दौरा करते। लेकिन जब वे यह काम कर ही रहे थे तब कलकत्ते से वारंट आया। वे गिरफ्तार कर लिये गए। उन्हें कलकत्ता भेज दिया गया। वहां उन्हें अलीपुर जेल में रखा गया। बाद में उन्हें अल्मोड़ा भेज दिया गया।

उन दिनों कमलादेवी का स्वास्थ्य गिरता जा रहा था। उनको तपेदिक की बीमारी थी। इलाज से वे ठीक हो जाती थीं लेकिन परिश्रम करने से फिर बीमार हो जाती थीं। वे बड़े घर की बेटी थीं। वे बड़े घर की बहू थीं। वे बड़े आदमी की पत्नी थीं। इसलिए बड़ी सुकुमार थीं। इसलिए बड़ी कोमल थीं। इसलिए वें राजकुमारी जैसी थीं। लेकिन अपने पति के कठोर जीवन को देखकर वे भी कठोर बन गईं। अपने पति की देश-सेवा को देखकर वे भी सेवा-भावी बन गईं। अपने पति को सरकार से लड़ता देखकर वे भी लड़ाई में कूद पड़ीं। अपने पति को रात-दिन काम में लगा देखकर वे भी परिश्रमी बन गईं।

स्वदेशी के आन्दोलन के समय उन्होंने सबसे पहिले विदेशी कपड़े छोड़ दिये थे। उन्होंने सबसे पहिले विदेशी

कपड़ों की होली जलाई थी। उन्होंने सबसे पहिले खादी पहिनना शुरू किया था। उन्होंने सबसे पहिले विदेशी कपड़ों की दूकानों पर धरना दिया। इलाहबाद के आन्दोलन में भाग लेनेवाली वे पहिली महिला थीं। उन्होंने सबसे पहिले मुहल्ले-मुहल्ले में स्वदेशी की आवाज़ पहुँचाई। उन्होंने सबसे पहिले गांव-गांव में स्वदेशी का सन्देश सुनाया। उन्होंने सबसे पहिले पुलिस और फ़ौज की अवहेलना की।

जब जवाहरलाल जी जेल चले जाते तब वे उनका ही काम किया करती थीं। तब वे देश का ही काम किया करती थीं। तब वे जवाहरलाल जी के ही प्रिय कामों में लगी रहती थीं। वे कष्ट सहने में नहीं हिचकती थीं। वे जेलजाने में नहीं हिचकती थीं। वे पुलिस की लाठियां और गोलियां खाने में नहीं हिचकती थीं। वे एक वीर पत्नी थीं। वे एक वीर माता थीं। वे एक वीर नेत्री थीं। उनके कामों से स्त्रियों को प्रेरणा मिलती थी। उनके कामों से पुरुषों को प्रेरणा मिलती थी। उनके कामों से स्त्रियों में जान आती थी। उनके कामों से पुरुषों में जान आती थी।

वे जीवन भर देश के शत्रुओं से लड़ती रहीं। वे जीवन भर शरीर के शत्रुओं से लड़ती रहीं। वे जीवन भर

शरीर के कष्टों से लड़ती रही। वे जीवन भर बुराइयों से लड़ती रही। जवाहरलाल जी उनसे बहुत प्रेम रखते थे। जवाहरलाल जी उन्हें बहुत चाहते थे। जवाहरलाल जी उनका बहुत आदर करते थे। केवल इसलिए नहीं कि वे उनकी पत्नी थी। बल्कि इसलिए कि वे वीर थी। इसलिए कि वे देश-भक्त थी। इसलिए कि वे साहसी थी। इसलिए कि वे तपस्विनी थी। इसलिए कि वे त्यागमूर्ति थी।

ज्यादा परिश्रम से वे बहुत कमजोर हो गईं। ज्यादा कष्ट-सहन से वें बीमार हो गईं। उन्हें बिस्तर पकड़ना पड़ा। कमजोरी दिन प्रतिदिन बढ़ने लगी। बीमारी दिन-प्रतिदिन बढ़ने लगी। सब लोग चिन्तित हुए। सरकार भी चिन्तित हुई। उसने जवाहरलाल जी को समय के पहले ही छोड़ दिया। उसने कहा–अगर वें राजनीति में भाग न लेगें तो उन्हें गिरफ्तार न किया जायगा। जवाहरलाल जी ने यह शर्त सुनी। वें परेशान हुए। क्योंकि वे राज-नीति नहीं छोड़ना चाहते थे। वे कमलादेवी को नहीं छोड़ना चाहते थे। लेकिन वे चुप रहे। वे मन में सोचते रहे। कमलादेवी ने भी यह शर्त सुनी। वे परेशान नहीं हुईं। वे दुखी नहीं हुईं। उन्होंने जवाहर-लाल जी से कहा "इस शर्त को कभी भी मंजूर मत

करिये।" जवाहरलाल जी को कमला के इस उत्तर से कितनी खुशी हुई होगी ?

जवाहरलाल जी ने कमलादेवी का कहना माना। उन्होंने वह शर्त नहीं मानी। वे फिर जेल गये। इधर कमलादेवी की हालत बिगड़ती गई। डाक्टर चिन्तित हुए। सबने तय किया कि उन्हें यूरोप ले जाना चाहिए। यूरोप में इलाज करवाना चाहिए। वहां की जलवायु में रहना चाहिए। उससे लाभ हो सकता है। उससे स्वास्थ्य सुधर सकता है। उन्हें यूरोप ले जाया गया। स्विट्जरलैण्ड में इलाज शुरू हुआ; लेकिन वहाँ भी कोई लाभ नहीं हुआ। फिर लोग चिन्तित हुए। फिर सरकार चिन्तित हुई। उसने फिर जावहरलाल जी को छोड़ दिया। फिर जवाहरलाल जी यूरोप गये। उन्होंने फिर कमलादेवी का खूब इलाज करवाया। उनकी जान बचाने के लिए फिर खूब प्रयत्न किया। लेकिन ईश्वर उनको बुलाना चाहता था। स्वर्ग में भी उनकी जरूरत थी। वे स्वर्ग सिधार गईं। वे अमर बन गईं।

जवाहरलाल जी को बड़ी चोट लगी। उनको बड़ा दुःख हुआ। यह दूसरा बड़ा दुःख था। यह दूसरी बड़ी चोट थी। लेकिन वे तो वीर हैं। वे तो साहसी हैं। वे तो धीर हैं। वे तो देशभक्त हैं। उन्होंने इस दुःख को

भी सहन कर लिया। उन्होंने इस दुःख को भी झेल लिया। कमलादेवी के फूल लेकर वे इलाहाबाद लौटे। फिर उतनी ही भीड़ इकट्ठी हो गई। फिर उतने ही लोग आ गये। फिर सबके चेहरे उदास हो गये। फिर सबके मन उदास हो गये। फिर सबकी आंखों में आंसू आ गए। कमलादेवी के फूल त्रिवेणी में विसर्जित कर दिये गए।

कमलादेवी की मृत्यु से माता स्वरूपरानी को भी बड़ी चोट लगी। वे भी बीमार रहा करती थीं। वे भी हमेशा चिन्तित रहा करती थीं। उनका स्वास्थ्य भी गिरता जा रहा था। एक दिन घर पर बैठी हुई बातें कर रही थीं। जवाहरलाल जी वहां थे। उनकी दोनों बहिनें वहां थीं। उनके बहनोई रणजीत पंडित वहां थे। उस रात को विजयलक्ष्मी और रणजीत पंडित लखनऊ जानेवाले थे। उस दिन वे बड़ी प्रसन्न थीं। रात हुई। जवाहरलाल जी ने कहा--माताजी, आप आराम कीजिये। दोनों बहिनों ने कहा--माताजी, आप आराम कीजिये। रणजीत पण्डित ने कहा--माताजी, आप आराम कीजिये। सबने कहा--आप का स्वास्थ्य अच्छा नहीं है। सबने कहा--आराम कीजिये। लेकिन वे नहीं मानी। वे बातें करती रहीं।

रात को ग्यारह बजे विजयलक्ष्मी स्टेशन पर जाने को तैयार हुई। रणजीत पण्डित भी जाने को तैयार हुए। जवाहरलाल जी भी तैयार हुए। विजयलक्ष्मी माताजी के पास गई। वे उनके गले मिली। लेकिन उसी समय वे लड़खड़ा गईं। वे गिरने लगीं। विजयलक्ष्मी ने उनको संभाला। जवाहरलाल जी ने दौड़कर उन्हें संभाला। उन्होंने माताजी को बिस्तर पर लिटाया। वे अचेत हो गईं। वे बेहोश हो गईं। डाक्टर बुलाये गए। दवाइयां मंगाई गईं। लेकिन डाक्टरों ने कहा, वे बच नहीं सकती। वे कुछ घंटों की मेहमान हैं। उनको लकवा मार गया है।

जवाहरलाल जी की आंखें भर आईं। विजयलक्ष्मी की आँखे भर आईं। कृष्णा देवी की आँखें भर आईं। रणजीत पंडित की आँखें भर आईं। डाक्टर की आँखें भर आईं। सबको बहुत दुःख हुआ। सब बड़े व्यथित हुए। माताजी स्वर्ग सिधार गईं। वे भी अमर बन गईं।

सारे इलाहाबाद में फिर शोक छा गया। सारे देश में फिर शोक छा गया। फिर अर्थी सजाई गई। फिर हजारों लोग इकट्ठे हो गये। फिर जुलूस निकला। फिर त्रिवेणी के किनारे गये। फिर दाह-क्रिया हुई और फिर लोग उदास मन से लौट आये।

माता स्वरूपरानी एक आदर्श पत्नी थीं। वे एक आदर्श माता थीं। वे एक आदर्श नेत्री थीं। उन्होंने अपने परिवार का सिर ऊंचा किया। उन्होंने अपने देश का सिर ऊँचा किया। उन्होंने देश को जवाहर जैसा रत्न दिया। सचमुच वे महान थीं।

: १० :

अन्तिम लड़ाई

सन् १९३६ में लखनऊ में कांग्रेस का अधिवेशन होनेवाला था। उस समय देश में बड़ा असन्तोष था। उस समय देश में बड़ी-बड़ी समस्याएं थी। उस समय दुनिया में बड़ी-बड़ी समस्याएं थी। उस समय देश में कुछ दल बनने लगे थे। उस समय कांग्रेस में कुछ दल बनने लगे थे। अतः ऐसे राष्ट्रपति की जरूरत थी जो देश के असन्तोष को दूर करे। ऐसे राष्ट्रपति की जरूरत थी जो देश की समस्याओं को हल करे। ऐसे राष्ट्रपति की जरूरत थी जो दुनिया की समस्या हल करने में मदद करे। ऐसे राष्ट्रपति की, जो दलबन्दी मिटादे।

सबका ध्यान जवाहरलाल जी की ओर गया। सबकी

नजरें जवाहरलाल जी पर पड़ीं। गांधीजी ने जवाहरलाल जी का नाम सुझाया। जवाहरलालजी का नाम पसन्द आया। सबने उनको राष्ट्रपति बना दिया। सबने उनको देश की बागडोर सौंप दी। सबने उनके बताये हुए रास्ते पर चलना स्वीकार कर लिया।

अधिवेशन शुरू हुआ। जवाहरलाल जी का जुलूस निकला। वे पैदल चल रहे थे। पैदल चलना ही उन्होंने पसन्द किया था। लेकिन भीड़ बढ़ गई। उनको घोड़े पर बैठना पड़ा। हजारों लोगों ने जय-जयकार किया। हजारों लोगों ने उनके दर्शन किए। हजारों लोगों ने अपने को धन्य माना। दूसरे दिन उन्होंने भाषण दिया। भाषण हिन्दुस्तानी में था। अंग्रेजी में नहीं था। इसलिए सब लोगों ने उसे ध्यान से सुना। सबने उसे पसन्द किया। सबपर उसका असर हुआ। अधिवेशन में १५ प्रस्ताव पास हुए। कुछ देश के सम्बन्ध में थे, कुछ विदेश के सम्बन्ध में। कुछ राजाओं के सम्बन्ध में थे, कुछ मज़दूरों के सम्बन्ध में। सब में देश का कष्ट मिटाने की बात थी। सब में देश को ऊंचा उठाने की बात थी। सब में देश का भला करने की बात थी।

अधिवेशस के समाप्त होने पर जवाहरलाल जी ने प्रत्येक प्रान्त का दौरा किया। वे सारे देश में गये।

उन्होंने सब लोगों का संगठन किया। उन्होंने सब लोगों को रास्ता दिखाया। उन्होंने सब लोगों को प्रेरणा दी। उन्होंने सब लोगों में उत्साह भरा। उन्होंने कांग्रेस को मज़बूत बनाया। उन्होने देश को मजबूत बनाया।

अब नये अधिवेशन का समय आगया। इस बार फ़ैज़पुर में अधिवेशन होनेवाला था। राष्ट्रपति के चुनाव की बात फिर आई। फिर लोगों की नज़र जवाहरलाल जी पर गई। वे फिर राष्ट्रपति चुने गये।

इस बार पहिली दफ़ा कांग्रेस का अधिवेशन गांव में हुआ। इस बार पहिली दफ़ा कांग्रेस का लाभ गांववालों को मिला। इस बार पहिली दफ़ा गांव के लोगों ने कांग्रेस की कार्रवाही देखी। उस समय देश के सामने नये चुनाव का सवाल था। उस समय देश के सामने विश्वयुद्ध का सवाल था। उस समय देश के सामने सरकारी पद लेने या न लेने का सवाल था। जवाहरलाल जी ने सब सवालों के हल बताये।

उनके सभापतित्व में सात प्रान्तों में कांग्रेस की सरकार बनी। उनके सभापतित्व में ७ प्रान्तों में जनता का सरकार बनी। उनके सभापतित्व में ७ प्रान्तों में बड़े-बड़े परिवर्तन हुए। उनके सभापतित्व में सात प्रान्तों में बड़े-बड़े काम हुए। उनके सभापतित्व में स्वराज्य की झलक

मिली। उनके सभापतित्व में थोड़ा-सा स्वराज्य मिला। उनके सभापतित्व में अंग्रेजी हुकूमत ढीली पड़ी।

सन् १६३६ में दूसरा महायुद्ध शुरू हो गया। सरकार ने कहा—हमारी मदद करो। सरकार ने कहा—हमें सिपाही दो। सरकार ने कहा—हमें पैसा दो। सरकार ने कहा—हमें अनाज दो। सरकार ने कहा—हमारे दुश्मन से लड़ो। जवाहरलाल जी ने कहा—लड़ाई अच्छी नहीं होती। उससे कोई लाभ नहीं होता। उसमें पूरी हानि होती है। जवाहरलाल जी ने कहा—जबतक हमें आजाद नहीं करोगे हम रुपया नहीं देंगे। हम आदमी नहीं देंगे। हम अनाज नहीं देंगे। हम लड़ेंगे नहीं।

सरकार का विरोध करने के लिए गांधीजी ने व्यक्तिगत सत्याग्रह किया। जवाहरलाल जी ने उसमें भाग लिया। वे फिर जेल गये। वे फिर कुछ दिन बाद छूटे। अब गांधीजी ने 'भारत छोड़ो' आन्दोलन शुरू किया। सन् १६४२ के अगस्त में आन्दोलन का प्रस्ताव पास हुआ। उसमें कहा गया—हम अंग्रेजी सरकार नहीं चाहते। हम अंग्रेजी अत्याचार नहीं चाहते। हम उसे सहन नहीं करेंगे। हम उसे मिटाकर चैन लेंगे। हम उसे हटाकर चैन लेंगे।

जवाहरलाल जी ने बड़ा प्रभावशाली भाषण दिया।

उन्होंने बड़ी जोशीली बातें कहीं। उन्होंने लोगों में उत्साह भर दिया। उन्होंने लोगों में साहस भर दिया। उन्होंने लोगों में ताक़त भर दी। गांधीजी ने भी यही किया। सरदार पटेल ने भी यही किया। मौलाना आजाद ने भी यही किया। राजेन्द्रबाबू ने भी यही किया। सभी नेताओं ने यही किया।

सरकार घबराई। सरकार परेशान हुई। उसने दूसरे ही दिन गांधीजी को गिरफ्तार किया। जवाहलाल जी को गिरफ्तार किया। सरदार पटेल को गिरफ्तार किया। राजेन्द्रबाबू को गिरफ्तार किया। मौलाना आजाद को गिरफ्तार किया। सारे नेताओं को गिरफ्तार किया।

सारे देश में बड़ी हल-चल मची। जगह-जगह जुलूस निकले। जगह-जगह भाषण हुए। जगह-जगह आन्दोलन हुए। जगह-जगह तोड़-फोड़ हुई। जगह-जगह लाठी चली। जगह-जगह गोली चली। जगह-जगह सरकार से लड़ाई हुई। जगह-जगह फौज बुलाई गई। जगह-जगह जुर्माने हुए। लेकिन लोगों का गुस्सा ठंडा नहीं हुआ। लेकिन लोगों का जोश ठंडा नहीं हुआ। लेकिन लोगों का बल कम नहीं हुआ।

जवाहरलाल जी की सरकार से यह अन्तिम लड़ाई थी। जवाहरलाल जी की यह अन्तिम जेल-यात्रा थी। वे

अहमदनगर जेल में रखे गये थे। उन्होंने जेल में खूब सूत काता। उन्होंने जेल में खूब किताबें पढ़ीं। उन्होंने जेल में खूब किताबें लिखी। उन्होंने अपना समय अच्छे-अच्छे कामों में लगाया। सरकार कबतक उनको जेल में रखती? आखिर उसे झुकना पड़ा। आखिर उसे हारना पड़ा। आखिर उसे जवाहरलाल जी को छोड़ना पड़ा। आखिर उसे सब नेताओं को छोड़ना पड़ा। एक हजार इकतालीस दिन बाद वे छोड़ दिये गए।

जेल से छूटने के बाद जवाहरलाल जी ने सबसे पहिले कहा—इस आन्दोलन पर मुझे गर्व है। जवाहरलाल जी ने सबसे पहिले कहा—जनता के इस साहस पर मुझे गर्व है। जवाहरलाल जी ने सबसे पहिले कहा—जनता के इस त्याग पर मुझे गर्व है। जवाहरलाल जी के इन शब्दों से जनता में फिर साहस आया। जनता में फिर उत्साह फैला।

: ११ :

प्रधान मन्त्री

इस समय दूसरा महायुद्ध समाप्त हो गया था। महायुद्ध के दिनों में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने एक

फौज बनाई थी। उसका नाम था आज़ाद हिन्द फौज। यह फौज नेताजी ने जापान के साथ मिलकर बनाई थी। इस फौज के द्वारा वे अंग्रेजों से लड़ना चाहते थे। इस फौज के द्वारा वे अंग्रेजी सरकार को मिटाना चाहते थे। इस फौज के द्वारा वे जनता की सरकार बनाना चाहते थे। वे अंग्रेजों से लड़े। कई बार लड़ाई हुई। कई जगह लड़ाई हुई। लेकिन अंग्रजों की फौज बड़ी थी। अंग्रेजों की फौज सुसज्जित थी। अंग्रेजों की फौज के पास अच्छे हथियार थे। आजाद हिन्द फौज को सफलता नहीं मिली।

लड़ाई समाप्त होने पर आजाद हिन्द फौज के सिपाही भारत आये। आजाद हिन्द फौज के आफीसर भारत आये। सरकार ने उनपर मुकदमा चलाया। सरकार ने उनको तंग किया। सरकार उनको सजा देना चाहती थी। सरकार उनको मिटा देना चाहती थी। जवाहरलाल जी को यह अच्छा न लगा। उन्होंने निर्भय होकर कहा—आजाद हिन्द फौज के सिपाही देश-भक्त हैं। उन्होंने साहस के साथ कहा—आजाद हिन्द फौज के सिपाही वीर हैं। हम उनका पक्ष लेंगे। हम उनकी वकालत करेंगे। हम उनको बचाएंगे। हम उनका बाल बांका न होने देंगे। जवाहरलाल जी की बात सबको अच्छी लगी॥

सारे देश ने उनकी बात मानी। बड़े-बड़े वकीलों ने उनकी वकालत की। बड़े-बड़े बैरिस्टरों ने उनकी वकालत की। खुद जवाहरलाल जी का परिश्रम सफल हुआ। फौज के सिपाही छोड़ दिये गये। फौज के आफीसर छोड़ दिये गये। जवाहरलाल जी की प्रतिष्ठा बढ़ गई।

भारत छोड़ो आन्दोलन से सरकार घबरा गई थी। आजाद हिन्द फौज से सरकार घबरा गई थी। लोगों के जोश से सरकार घबरा गई थी। लोगों की देश-भक्ति से सरकार घबरा गई थी। नेताओं की ताकत से सरकार घबरा गई थी। उसने भारत छोड़ना ही ठीक समझा। उसने भारत को आजाद कर देना ही ठीक समझा। उसने जनता को ही राज सौंप देना ठीक समझा। इसलिए उसने बात-चीत शुरु की। सारे नेताओं को बुलाया। सारे दलों को बुलाया। जवाहरलाल जी गये। सरदार पटेल गये। गांधीजी गये। राजेन्द्र बाबू गये। मुहम्मद अली जिन्ना गये। लियाकत अली खां गये। मौलाना आज़ाद गये। राजाजी गये। अम्बेदकर गये। और भी बहुत से लोग गये। बहुत दिनों तक बातें हुई। बहुत दिनों तक विचार हुआ। आखिर कांग्रेस ने जवाहरलाल जी को ही प्रधान मन्त्री चुना। आखिर जनता ने जवाहरलाल जी को ही प्रधान मन्त्री चुना। आखिर मुस्लिम

लोग ने भी इस बात को माना। आखिर दूसरे लोगों ने भी इस बात को माना।

जवाहरलाल जी प्रधान मन्त्री बने। जवाहरलाल जी ने देश की हुकूमत अपने हाथ में ली। जवाहरलाल जी ने देश की बागडोर अपने हाथ में ली। उन्होंने देश की भलाई का काम शुरू किया उन्होंने देश को ऊंचा उठाने का काम शुरू किया। उन्होंने देश को अच्छा बनाने का काम शुरू किया। लेकिन कुछ लोग ऐसे थे जो इसे पसन्द नहीं करते थे। जो देश को गिराना चाहते थे। जो देश को नुकसान पहुंचाना चाहते थे। जो अपना मतलब साधना चाहते थे। उन्होंने आपस में लड़ाई शुरू की। उन्होंने बंगाल में झगड़े शुरू किये। उन्होंने पंजाब में झगड़े शुरू किये। उन्होंने सिन्ध में झगड़े शुरू किये। उन्होंने सीमाप्रान्त में झगड़े शुरू किये। हजारों लोग मर गये। हजारों लोग बरबाद हो गये। हजारां लोग घर छोड़कर भागने लगे। हजारों लोग इधर से उधर गये। हजारों उधर से इधर आये। जवाहरलाल जी ने खाना छोड़ दिया। जवाहरलाल जी ने सोना छोड़ दिया। जवाहरलाल जी ने आराम छोड़ दिया। वे झगड़े शान्त करने में लग गये। वे झगड़े मिटाने में लग गये। वे लोगों की मदद करने में

लग गये। वे लोगों को बसाने में लग गये। वे लोगों को काम देने में लग गये। आखिर उन्होंने झगड़े शान्त कर दिये। उन्होंने झगड़े मिटा दिये। उन्होंने लोगों को बसा दिया। उन्होंने लोगों को काम दिला दिया।

जवाहरलाल जी ने एशिया के देशों का एक सम्मेलन दिल्ली में बुलाया। एशिया के सब देशों को निमन्त्रण भेजा गया। एशिया के सब देशों को यह विचार अच्छा लगा। एशिया के सब देशों ने निमन्त्रण स्वीकार किया। सन् १९४७ में २३ मार्च के दिन सन्मेलन शुरू हुआ। २५९ प्रतिनिधि अलग अलग देशों से आये। सम्मेलन में जापान के प्रतिनिधि आये। सम्मेलन में अफगानिस्तान के प्रतिनिधि आये। सम्मेलन में बर्मा के प्रतिनिधि आये। सम्मेलन में एशियाई रूस के प्रतिनिधि आये। सम्मेलन में लंका के प्रतिनिधि आये। सम्मेलन में गांधीजी आये।

श्रीमती सरोजिनी नायडू सम्मेलन की अध्यक्षा थीं। जवाहरलाल जी ने सम्मेलन का उद्घाटन किया। उन्होंने एशिया के देशों से मिल-जुल कर काम करने के लिए कहा। उन्होंने एशिया के देशों से आपस में प्रेम रखने के लिए कहा। उन्होंने एशिया के देशों से दुनिया की उन्नति में हाथ बटाने को कहा। उन्होंने एशिया के देशों

से विदेशी हुकूमत खतम कर देने को कहा । उन्होंने एशिया के देशों से अपने पैरों पर खड़ा होने को कहा।

सम्मेलन में वहुत सी बातों पर विचार हुआ। उसमें एशिया की आर्थिक उन्नति पर विचार हुआ। उसमें एशिया की सामाजिक उन्नति पर विचार हुआ। उसमें एशिया की राजनैतिक उन्नति पर विचार हुआ। उसमें एशिया की सांस्कृतिक उन्नति पर विचार हुआ। सबने जवाहरलाल जी की बात पसन्द की। सबने जवाहरलाल जी के विचार पसन्द किये। सबने जवाहरलाल जी को बड़ा माना। सबने जावहरलाल जी की तारीफ की। जवाहरलाल जी के इस काम से एशिया में भारत की इज्जत बढ़ी। जवाहरलाल जी के इस काम से दुनिया में भारत की इज्जत बढ़ी।

अब काश्मीर पर एक मुसीबत आई। अब काश्मीर पर एक संकट आया। काश्मीर के महाराजा ने भारत में मिलने का निश्चय किया। काश्मीर के नेता शेख अब्दुल्ला ने भारत में मिलने का निश्चय किया। काश्मीर की जनता ने भारत में मिलने का निश्चय किया। पाकिस्तान को बुरा लगा। क्योंकि वह काश्मीर को अपने में मिलाना चाहता था। उसने काश्मीर पर हमला बोल दिया। काश्मीर बड़े संकट में आगया। काश्मीर के लोग बड़े

संकट में आगये। काश्मीर के महाराजा बड़े संकट में आगये। सबने भारत सरकार से प्रार्थना की। सबने जवाहरलाल जी से प्रार्थना की।

जवाहरलाल जी को काश्मीर बहुत पसन्द है। वहां के पहाड़ उन्हें बहुत पसन्द हैं। वहां के दृश्य उन्हें बहुत पसन्द हैं। वहां की झीलें उन्हें बहुत पसन्द हैं। वहां की नदियां उन्हें बहुत पसन्द हैं। काश्मीर की मदद करना जरूरी हो गया। काश्मीर को बचाना जरूरी हो गया। उन्होंने फौज भेज दी। उन्होंने हथियार भेज दिये। उन्होंने लड़ाई का सब सामान भेज दिया। भारतीय फौज ने लड़ाई शुरू कर दी। उसने कबाइलियों को पीछे ढकेल दिया। उसने कबाइलियों से काश्मीर को बचा लिया। उसने कबाइलियों को खदेड़ दिया।

वे कई बार काश्मीर गये। कई बार उन्होंने वहां लोगों से मुलाकात की। कई बार उन्होंने वहां भाषण दिये। कई बार लोगों को चीजें भेजीं। कई बार वहां की हालत देखी। जब कबाइली हारने लगे। जब कबाइली भागने लगे तो पाकिस्तान ने लड़ाई शुरू कर दी। वह मैदान में आ गया। उसके लिए चुपचाप लड़ना कठिन हो गया। लड़ाई चलती रही। लेकिन जवाहरलाल जी ने पड़ोसी देश से लड़ना ठीक नहीं समझा। जवाहरलाल

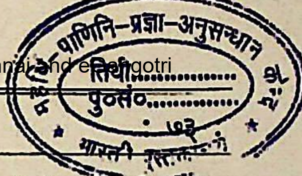
जी ने आपस में लड़ना अच्छा नहीं समझा। उन्होंने राष्ट्र-संघ को यह मामला सौंप दिया। उन्होंने राष्ट्र-संघ के निर्णय को मानना स्वीकार कर लिया। राष्ट्र-संघ काश्मीर के बारे में विचार कर रहा है। वह काश्मीर का सवाल हल करने में लगा है।

काश्मीर के बाद हैदराबाद का सवाल आया। हैदराबाद के कुछ मुसलमान पाकिस्तान के साथ मिलना चाहते थे। उन्होंने हैदराबाद में उपद्रव शुरू कर दिये। उन्होंने हैदराबाद में अशान्ति फैलानी शुरू कर दी। उन्होंने हैदराबाद में अराजकता फैलाना शुरू कर दी। जवाहरलाल जी ने समझौता करने की कोशिश की। जवाहरलाल जी ने शान्ति रखने की कोशिश की। जवाहर-लाल जी ने लड़ाई को टालने की कोशिश की। उन्होंने कहा—हैदराबाद की बहुत सी जनता भारत में मिलना चाहती है। उन्होंने कहा—हैदराबाद की बहुत-सी जनता पाकिस्तान में नहीं मिलना चाहती। उन्होंने कहा—हैदरा-बाद सरकार को बहुत सी जनता की इच्छा माननी चाहिए। उन्होंने कहा—हैदराबाद भारत का हिस्सा है। उसे भारत में मिलना चाहिए। लेकिन हैदराबाद सरकार ने उनकी बात नहीं मानी। अब लड़ाई करना जरूरी हो गया। जवाहरलाल जी ने फौज भेज दी। वे तेज़ी से हैदरा-

बाद में घुस गई। हैदराबाद की सेनाएं हार गईं। हैदराबाद भारत में मिल गया। चारों तरफ जवाहरलाल जी की विजय की धूम मच गई। चारों तरफ जवाहरलाल जी की विजय से खुशी फैल गई। चारों तरफ जवाहरलाल जी की जीत से बदमाश डर गये।

लेकिन जवाहरलाल जी को इन्हीं दिनों एक बहुत बड़ा धक्का लगा। एक सिरफिरे आदमी ने गांधीजी पर गोली चला दी। वे घायल होकर गिर पड़े। वे सदा के लिए सो गये। जवाहरलाल जी को यह बहुत बड़ा धक्का लगा। गांधीजी उनके गुरू थे। गांधीजी उनके पथ-दर्शक थे। गांधीजी उनके पूज्य थे। गांधीजी की मृत्यु पर उन्होंने कहा—हमारा प्रकाश बुझ गया। हमारे चारों तरफ अंधेरा छा गया। हमें रास्ता दिखाने वाला चला गया। अब हमें एकता से रहना चाहिए। उन्होंने गांधीजी का बड़ा गुण-गान किया। उन्होंने गांधीजी के रास्ते पर चलने का निश्चय किया।

जवाहरलाल जी ने देश के लिए और भी बड़े-बड़े काम किये। देश में अनाज की कमी हो गई। देश में धन की कमी हो गई। देश में चीजों की कमी हो गई। जवाहरलाल जी ने नये-नये बांध बनवाये। जवाहरलाल जी ने नई-नई नहरें निकलवाईं। जवाहरलाल जी ने नई-नई



जमीनों में खेती करवाई। जवाहरलाल जी ने नये-नये कारखाने बनवाये। जवाहरलाल जी ने नई-नई योजनायें बनवाई।

जवाहरलाल जी ने नया विधान बनाया। जवाहरलाल जी ने पुराना विधान हटाया। विधान में कहा गया—देश के सब लोग बराबर हैं। देश के सब लोग आजाद हैं। देश के सब लोग भाई-भाई हैं। सबको बराबर स्वतन्त्रता मिलेगी। सबको बराबर अधिकार मिलेंगे। सबको बराबर मौके मिलेंगे। सब देश के सेवक रहेंगे। सब देश के मालिक रहेंगे।

जवाहरलाल जी ने इंग्लैण्ड की यात्रा की। जवाहरलाल जी ने फ्रांस की यात्रा की। जवाहरलाल जी ने अमरीका की यात्रा की। जवाहरलाल जी ने कनाड़ा की यात्रा की। जवाहरलाल जी ने लका की यात्रा की। जवाहरलाल जी ने इंडोनेशिया की यात्रा की। सब जगह उन्होंने कहा—दुनिया से गुलामी हटाओ। सब जगह उन्होंने कहा—दुनिया से गरीबी हटाओ। सब जगह उन्होंने कहा—दुनिया से भेद-भाव मिटाओ। सब जगह उन्होंने कहा—आपस में प्रेम से रहो। सब जगह उन्होंने कहा—गांधीजी का रास्ता अपनाओ। सब जगह उनकी बात का असर हुआ। सब जगह उनकी बात मानी गई। सब जगह उनकी इज्जत हुई। सब जगह भारत की इज्जत बढ़ी। सब जगह देश का नाम ऊंचा हुआ।

: १२ :

व्यक्तित्व

आप में से बहुतों ने जवाहरलाल जी को देखा होगा। आप में से बहुतों ने जवाहरलाल जी का भाषण सुना होगा। आप में से बहुतों ने जवाहरलाल जी की तारीफ़ सुनी होगी। लेकिन शायद आप में से किसी ने उनको पास से नहीं देखा होगा। शायद आप में से किसी ने उनसे बातें नहीं की होंगी। शायद आप में से किसी ने उनको पहिचाना न होगा।

ऊपर से जवाहरलाल जी गुस्सेबाज लगते हैं। ऊपर से वे तुनक मिजाज लगते हैं। ऊपर से वे छोटी-छोटी बातों पर बिगड़ जानेवाले लगते हैं। ऊपर से वे हठी लगते हैं। लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं है। वास्तव में वे बड़े सहनशील हैं। बड़ी-बड़ी मुसीबतों को वे हँसते-हँसते सह लेते हैं। बड़े-बड़े कष्टों को वे हँसते-हँसते सह लेते हैं। बड़ी-बड़ी चोटों को वे हंसते-हंसते सह लेते हैं। वे गुस्से में कोई बड़ा काम नहीं करते। वे गुस्से में कोई बड़ी बात नहीं कहते। वे गुस्से में कोई निर्णय नहीं करते। गुस्सा उनका खानदानी स्वभाव है। मोतीलाल-जी भी गुस्सेबाज़ थे। मोतीलालजी के चाचाजी भी गुस्सेबाज़ थे। उनका गुस्सा बुदबुदे की तरह है। वह



उठता है और मिट जाता है। वह आता है और चला जाता है। वह उनपर स्थायी असर नहीं डलता। वह उनको पागल नहीं बनाता। वह उनकी बुद्धि नष्ट नहीं करता। उनको उससे दुःख होता है। उनको उससे पश्चात्ताप होता है।

ऊपर से जवाहरलाल जी राजनीतिज्ञ लगते हैं। ऊपर से जवाहरलाल जी गंभीर लगते हैं। ऊपर से जवाहरलाल जी लिखने-पढ़ने में ही सारा समय बितानेवाले लगते हैं; लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं है। जवाहरलाल जी बड़े सरल हैं। जवाहरलाल जी बड़े कला-प्रेमी हैं। जवाहरलाल जी बड़े साहित्यकार हैं। जवाहरलाल जी बड़े दार्शनिक हैं। जवाहरलाल जी बड़े व्यवहार-कुशल हैं। उनको घोड़े की सवारी बड़ी पसन्द है। उनको हवाई जहाज की उड़ान बड़ी पसन्द है। उनको तैरना बड़ा पसन्द है। उनको खेल-तमाशे बड़े पसन्द हैं। उनको सिनेमा-थियेटर बड़े पसन्द हैं। उनको बच्चों से बात करना अच्छा लगता है। उनको बच्चों से खेलना अच्छा लगता है। उनको बच्चों को प्यार करना अच्छा लगता है। वे कितने ही काम में लगे हों, बच्चों के आते ही काम छोड़ देते हैं। वे कितने ही काम में लगे हों, बच्चों के आते ही उनसे बात करते हैं। वे कितने ही काम में लगे हों, बच्चों के आते ही उनको

प्यार करते हैं। बच्चों में उनकी बड़ी दिलचस्पी है। वे बच्चों के साथ बहुत खुश रहते हैं।

दिनभर के थका देनेवाले परिश्रम के बाद वे बच्चों के साथ कुछ समय बिताते हैं। अपने भानजों-भानजियों के साथ कुछ समय बिताते हैं। अपने पोतों के साथ कुछ समय बिताते हैं। बच्चों के साथ वे बच्चे बन जाते हैं। सारी चिन्ताएँ भूल जाते हैं। सारी परेशानियां भूल जाते हैं। सारी थकावट भूल जातें हैं। वे बच्चों के साथ हँसतें हैं। वे बच्चों के साथ रोतें हैं। वे बच्चों के साथ खेलते हैं। वे बच्चों के साथ दौड़तें हैं। वें बच्चों में मस्त हो जातें हैं।

ऊपर से जवाहरलाल जी कठोर लगते हैं। ऊपर से जवाहरलाल जी धनी लगते हैं। ऊपर से जवाहरलाल जी अमीर लगते हैं। लेकिन वास्तव में उनके मन में गरीबों के लिए बड़ा प्रेम है। उनके मन में निर्बलों के लिए बड़ी सहानुभूति है। उनके मन में पतितों के लिए बड़ी दया है। उनके मन में असहायों के लिए बड़ी वेंदना है। उनके मन में पीड़ितों के लिए बड़ा दर्द है।

ऊपर से जवाहरलाल जी स्वाभिमानी लगते हैं। दूसरों पर हुक्म चलानेवाले लगते हैं। अपने को बड़ा समझने-वाले लगते हैं। लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं है। वें

शानदार आदमी हैं। वे निरभिमानी आदमी हैं। वे प्रशंसा से दूर रहनेवाले आदमी हैं। वे नाम से दूर रहनेवाले आदमी हैं। वें अपने को बड़ा नेता नहीं कहते। वे अपने को बड़ा देशभक्त नहीं कहते। वे अपने को शहीद नहीं कहते। वे अपने को विद्वान् नहीं कहते। वे अपने को योद्धा नहीं कहते। वे अपने को एक सैनिक कहते हैं। वे अपने को मानव कहते हैं। वे अपने को सेवक कहते हैं। यही उनका बड़प्पन है। यही उनकी महानता है। यही उनकी विशेषता है। यही उनका स्वभाव है।

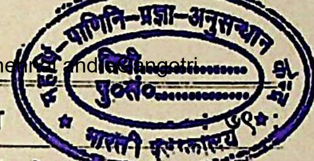
जवाहरलाल जी कई बार जेल गए हैं। वे वर्षों तक जेल में रहे हैं। उन्होंने बड़ी-बड़ी मुसीबतें उठाई हैं। उन्होंने बड़े-बड़े खतरे उठाये हैं। फिर भी वह जेल जाना कोई बड़ा काम नहीं मानते। फिर भी वे मुसीबतें उठाना कोई बड़ा काम नहीं मानते। फिर भी वे खतरे उठाना कोई बड़ा काम नहीं मानते। वे बड़े नम्र हैं। वे बड़े उदार हैं। वे बड़े सहनशील हैं।

जवाहरलाल जी को आलसीपन पसन्द नहीं। जवाहरलाल जी को सुस्ती पसन्द नहीं। जवाहरलाल जी को काहिली पसन्द नहीं है। जवाहरलाल जी को अयोग्यता पसन्द नहीं। जवाहरलाल जी को ढील-ढाल पसन्दनहीं।

जवाहरलाल जी को लापरवाही पसन्द नहीं। जवाहरलाल जी को कायरता पसन्द नहीं। वे इनको पाप समझते हैं। वे इनको असह्य समझते हैं। वे इनको बहुत बुरा समझते हैं। वे इनको माफ़ नहीं करते। वे फ़ुर्तीले हैं और फुर्ती पसन्द करते हैं। वे परिश्रमी हैं और परिश्रम पसन्द करते हैं। वे ज़िम्मेदार हैं और जिम्मेदारी पसन्द करते हैं। वे योग्य हैं और योग्यता पसन्द करते हैं। वे तेजस्वी हैं और तेजस्विता पसन्द करते हैं। वे बहादुर हैं और बहादुरी पसन्द करते हैं।

जवाहरलाल जी आदर्शवादी हैं। जवाहरलाल जी स्वप्नदर्शी हैं। वे अच्छी-अच्छी शानदार बातें सोचते हैं। वे अच्छी-अच्छी शानदार बातें बोलते हैं। वे अच्छी-अच्छी शानदार बातें करते हैं। उनको भारत के भविष्य में विश्वास है। उनको भारत की महानता में विश्वास है। उनको भारत की तरक्की में विश्वास है। उनको अपनी सच्चाई में विश्वास है। उनको अपने परिश्रम में विश्वास है। भारत को बड़ा बनाने में वे अपना सब कुछ मिटा देंगे।

जवाहरलाल जी अपनी बात के सच्चे हैं। जवाहरलाल जी अपनी बात के धनी हैं। जवाहरलाल जी अपनी जबान के पक्के हैं। वे झूठा वायदा नहीं करते। वे झूठा वचन नहीं देते। वे झूठा भरोसा नहीं देते। वे



जो कुछ कहते हैं उसे करके दिखाते हैं। वे जो कुछ वचन देते हैं उसे पूरा करते हैं। जो भरोसा दिलाते हैं उसे निभाते। वे जेब में एक डायरी रखते हैं। उसमें सब बातें लिखते हैं। इसलिये कि उनको पूरा कर सकें। इसलिये कि उनको निभा सकें। वे अपने साथियों को याद रखते हैं। वे अपने साथियों की मदद करते हैं। वे अपने साथियों का खयाल रखते हैं। वे अपने साथियों का आदर करते हैं।

जवाहरलाल जी में पूर्व और पश्चिम का अद्भुत मेल है। जवाहरलाल जी में आदर्श और यथार्थ का अद्भुत मेल है। जवाहरलाल जी में कोमलता और दृढ़ता का अद्भुत मेल है। जवाहरलाल जी में सदयता और अनुशासन का अद्भुत मेल है। वे सरल हृदय हैं पर भोले भावुक नहीं हैं। वे भक्त हैं पर अन्धे अनुयायी नहीं हैं। वे सहृदय हैं पर कमजोर नहीं हैं। वे वैज्ञानिक हैं पर रूखे नहीं हैं। वे प्रेमी हैं पर विलासी नहीं हैं। वे कलाकार हैं पर कल्पनाविहारी नहीं है। वे कुटुम्ब वाले हैं पर मोह-ममता में फंसे हुए नहीं हैं।

जवाहरलाल जी गांधीजी के शिष्य हैं। जवाहरलाल जी गांधीजी के भक्त हैं। जवाहरलाल जी गांधीजी के प्रतिनिधि हैं। जवाहरलाल जी गांधीजी के उत्तराधिकारी

हैं। वे दुनिया को अहिंसा का सन्देश दे रहे हैं। वे दुनिया को प्रेम का सन्देश दे रहे हैं। वे दुनिया को सत्य का सन्देश दे रहे हैं। वे दुनिया को दया का सन्देश दे रहे हैं। वे दुनिया को शांति का सन्देश दे रहे हैं।

जवाहरलाल जी ने देश को आजाद कराया है। जवाहरलाल जी ने देश को ऊंचा उठाया है। जवाहरलाल जी ने देश को आगे बढ़ाया है। जवाहरलाल जी ने देश का संकट भगाया है। लेकिन अभी उन्हें देश को और आगे बढ़ाना है। लेकिन अभी उन्हें देश को और ऊंचा उठाना है। लेकिन अभी उन्हें देश के और संकट भगाने हैं। लेकिन अभी उन्हें दुनिया को और आगे बढ़ाना है। लेकिन अभी उन्हें दुनिया को और ऊंचा उठाना है। लेकिन उन्हें अभी दुनिया के संकट दूर करने हैं। इस काम में आपको उनकी मदद करनी है। इस काम में आपको उनके साथ रहना है। इस काम में आपको उनके इशारे पर चलना है। इस काम में आपको उनका काम बटाना है। इस काम में आपको उनका बोझ हल्का करना है। वे आपसे यही आशा रखते हैं। वे आपसे यही भरोसा रखते हैं। वे आपसे यही चाहते हैं। इसलिये उनके काम में लग जाइये। इसलिये दुनिया के काम में लग जाइये।

'बाल-साहित्य-माला' की अन्य पुस्तकें

१. हरिश्चन्द्र
२. एवरेस्ट की कहानी
३. विजय किसकी ?
४. देश-प्रेम की कहानियां
५. सीख की कहानियां
६. सावनमल का इन्साफ
७. चिड़िया की नसीहत
८. मेरा घर
९. देश-वार्ता
१०. भले रहो चंगे रहो
११. बीरबल की कहानियां
१२. सबके बापू
१३. हमारे सरदार
१४. मां का बेटा
१५. जीवन-पराग

मूल्य बारह आना